केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

(एन.ए.ए.सी. के द्वारा श्रेणी 'अ' में स्वीकृत)

Central Institute of Buddhist Studies

(Deemed to be University)

Accredited by NAAC with 'A' Grade

वार्षिक विवरण

ANNUAL REPORT 2020-2021

चोगलमसर, लेह (केंद्रशासित प्रदेश लद्दाख)

Choglamsar, Leh (Union Territory of Ladakh)

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

(एन.ए.ए.सी. के द्वारा श्रेणी 'अ' में स्वीकृत)

वार्षिक प्रतिवेदन

2020-2021

चोगलमसर, लेह (केंद्रशासित प्रदेश लद्दाख)

विषयानुक्रमणी

		पृ.सं.
1.	संक्षिप्त इतिहास	5
2.	उद्देश्य	6
3.	सोसाइटी	7
4.	प्रबन्धन	7
5.	उप–समितियों का गठन	8
6.	निधि	8
7.	कर्मचारी संख्या	9
8.	संकाय तथा विभाग	9
9.	नवीन प्रवेश	12
10.	संगोष्ठी / परिसंवाद / कार्यशाला	12
11.	छात्र विनियम कार्यक्रम	13
12.	शैक्षिक यात्रा	16
13.	प्रकाशन	16
14.	शोध कार्य	17
15.	परिसर	17
16.	पुस्तकालय	17
17.	संग्रहालय	18
18.	विशेष व्याख्यान / अन्य शैक्षिक क्रियाकलाप	18
19.	पाठ्यक्रम	19
20.	छात्रवृत्ति	21
21.	विद्यार्थियों को पाठय पुस्तक एवं कापियों का निःशुल्क वितरण	22
22.	परीक्षा परिणाम	22
23.	गोनपा / श्रामणेरी विद्यालय	22
24.	वार्षिक समारोह	23
25.	अन्य महत्वपूर्ण घटनायें	23
26.	शीतकालीन शिविर	25
27.	हिमालयी बौद्ध–संस्कृति–विश्वकोश संकलन के लिए परियोजना	25

28. पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र 26
29. उपाधि / उपाधि–पत्र प्राप्त करने के पश्चात् छात्रों की नियुक्ति 26
30. पाठ्य पुस्तकों का पुनरीक्षण और संपादन 27
31. डुजिंग फोडंग विद्यालय 27
32. बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, मंडोगुलु (हि.प्र.) 29

36. परिशिष्ट

(i) संस्था की संरचना 31
(ii) प्रबन्धकारिणी समिति की संरचना 33
(iii) विद्या परिषद की संरचना 34
(iv) वित्तीय समिति की संरचना 35
(v) प्रकाशन समिति की संरचना? 36
(vi) पुस्तकालय–समिति की संरचना 37
(vii) शोध–समिति की संरचना 38
(viii) केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान की कर्मचारी संख्या 39
(ix) केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह का परीक्षा परिणाम 41
(x) गोनपा / श्रामणेरी विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय–वार एवं कक्षा–वार नामांकन 42
(xi) परीक्षा का परिणाम (डी.पी.एस., जंस्कार) 45
(xii) कर्मचारी संख्या (डी.पी.एस., जंस्कार) 46
(xiii) परीक्षा का परिणाम (बी.डी.एस.वी., केलांग) 47
(xiv) कर्मचारी संख्या (बी.डी.एस.वी., केलांग) 48

1. संक्षिप्त इतिहास :

सन् 1959 से पूर्व लदाख के विद्वान्, श्रामणेर एवं भिक्षु उच्च बौद्ध शिक्षा के लिए तिब्बत जाते थे। वे तिब्बत जाकर वहाँ के विभिन्न प्रसिद्ध महाविहारों, यथा– ड्रि–गुङ, ग–दन, सेरा, टशी–ल्हुनपो, ड्रे–पुङ, सक्या, सङ्–ङग–छोसलिङ, देरगे आदि में अनेक वर्षों तक बौद्ध विद्याओं का अध्ययन करते थे। परन्तु सन् 1959 की दुर्भाग्यपूर्ण घटना के परिणामस्वरूप अचानक इस परम्परा में व्यवधान पैदा हुआ। तत्पश्चात् यह आवश्यकता अनुभव की गयी कि बौद्ध दर्शन के विधिवत् अध्ययन के लिए इस आर्य देश अर्थात् भारत में ही एक बौद्ध विद्या केन्द्र की स्थापना की जाय। बौद्ध संस्कृति एवं दर्शन के प्रचार–प्रसार के लिए लेह को चिह्नित किया गया, जो प्राकृतिक, भौगोलिक एवं पारम्परिक दृष्टि से सर्वथा अनुकूल था।

तदनुसार चौदहवें परमपावन दलाई लामा जी के वरिष्ठ गुरयोंगजिन लिङ रिन्पोछे द्वारा वर्तमान केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान की पूजन–विधि द्वारा स्थापना की गयी। यह संस्थान प्रारंभ में 'बौद्ध दर्शन महाविद्यालय' के नाम से जाना जाता था। सन् 1962 में स्व॰ भदन्त कुशोक बकुला जी के आग्रह पर तत्कालीन प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने लदाख के लोगों के बीच इस प्रकार के संस्थान की आवश्यकता का अनुभव किया। तदनुसार उन्होंने इस संस्थान को प्रबंधन एवं वित्तीय सहायता के लिए भारत सरकार के संस्कृति विभाग को सौंपना स्वीकार किया।

प्रारम्भ में इस संस्थान में मात्र 10 भिक्षु छात्र अध्ययन करते थे, जो लदाख के विभिन्न गोनपाओं से संबद्ध थे। छात्रों को भोट साहित्य तथा बौद्ध दर्शन पढ़ाने के लिए दो अध्यापकों को नियुक्त किया गया था। लगभग तीन वर्षो तक सभी विद्यार्थियों एवं अध्यापकों का खर्च उपर्युक्त दस गोनपाओं ने वहन किया। सन् 1959 से 1961 तक यह विद्यालय लेह में स्थित रहा। उसके पश्चात् इसको लेह से लगभग 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित स्पितुग गाँव में स्थानान्तरित किया गया। सन् 1973 में संस्थान को लेह से 8 किलोमीटर दक्षिण–पूर्व दिशा में चोगलमसर में पुनः स्थानान्तरित किया गया। सन् 1964 में संस्थान को एक शैक्षिक संस्थान के रूप में 1998 के जम्मू–कश्मीर पंजीकरण अधिनियम VI (1941 ई.) के तहत पंजीकृत किया गया। बौद्ध दर्शन और भोटी भाषा एवं साहित्य के अतिरिक्त संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी विषयों का अध्ययन प्रारम्भ किया गया। सन् 1973 में संस्थान को सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, उ॰प्र॰ से सम्बद्ध कराया गया और सीमांत क्षेत्र के छात्रों के लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम शुरू किए गए। वर्ष 2016 में भारत सरकार के मानव संसाधन विकासमंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सिफारिश पर यूजीसी अधिनियम की धारा 3, 1965 के तहत अधिसूचना संख्या एफ. 9–5/2001–यू.3(ए) दिनांक 15–01–2016 के अनुसार केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह को 'सम विश्वविद्यालय' का दर्जा प्रदान किया।

बौद्ध विद्या के प्रकाण्ड तिब्बती विद्वान् भदन्त येशे थुबतन ने 1959 से 1967 तक संस्थान के प्रथम प्राचार्य के रूप में कार्य किया। तत्पश्चात् प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान भदन्त लोछोस रिन्पोछे जी की

संस्थान के द्वितीय प्राचार्य के रूप में नियुक्ति हुई। डॉ. टशी पलजोर ने सन् 1979 से 2005 तक संस्थान के प्राचार्य के रूप में कार्य किया। सन् 2005 से 2010 तक पाँच साल प्राचार्य के रूप में कार्य करने के बाद डॉ. नवांग छेरिंग संस्थान के प्राचार्य के पद से सेवानिवृत्ति हुए और 15 जून 2010 को डॉ. वंगछुग दोर्जे नेगी ने प्राचार्य पद का प्रभार लिया। तदनन्तर, दिनांक 19–12–2011 को सम्पन्न हुई प्रबंधकारिणी की बैठक में प्राचार्य के पद को निदेशक के रूप में पुनर्नामकरण करने का निर्णय लिया गया। दिनांक 12–12–2014 कोडॉ. वंगछुग दोर्जे नेगी ने निदेशक पद को छोड़ दिया। वर्तमान में प्रो. कोनछोग वंगदु संस्थान के निदेशक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

2. उद्देश्य

संस्थान का मूल उद्देश्य छात्रों की प्रतिभा अर्थात् व्यक्तित्व को बौद्ध विचार, साहित्य, कला एवं विविध आधुनिक विषयों के ज्ञान द्वारा विकसित और सुसज्जित करना है। सम्पूर्ण हिमालयी क्षेत्रों की बौद्ध संस्कृति एवं कला की शिक्षा हेतु यह इस देश का एक अपूर्व संस्थान है। संस्थान बौद्ध दर्शन और सांस्कृतिक अध्ययन में स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट कार्यक्रम चलाती है और फीडर स्कूलों को स्थापित और देखरेख करता है। उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संस्थान ने निम्नलिखित लक्ष्य निर्धारित किये हैं–

1) पूर्व में बौद्ध दर्शन महाविद्यालय के नाम से जाना जाने वाला शैक्षिक संस्थान केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर के विकास और प्रबंधन की देखभाल और सुसंचालन करना है।

2) ज्ञान की शाखाओं में उत्कृष्टता एवं नवीनता की ओर ले जाने के लिए उच्च शिक्षा प्रदान करना, जिन्हें मुख्य रूप से स्नातकोत्तर और शोध डिग्री के स्तर पर उपयुक्त समझा जा सके, जो विश्वविद्यालय की अवधारणा के अनुरूप हों, अर्थात विश्वविद्यालय शिक्षा विवरण (1948), भारत में उच्च शिक्षा के नवीकरण, क्रियाकलाप पर समिति का विवरण (2009) और समीक्षा समिति विवरण के समवत् विश्वविद्याएँ (2009)।

3) विश्वविद्यालय शिक्षा प्रणाली के उद्देश्य हेतु विशिष्ट सहयोग के लिए विशेष क्षेत्रों में परीक्षित योग्यता के साथ काम में लगाना है। अर्थात् शैक्षणिक काम एक सामान्य स्वभाववाले कार्यक्रमों यथा– कलाविषय, विज्ञान, इंजीनियरिंग, चिकित्सा, दंत चिकित्सा की पढ़ाई, फार्मेसी तथा प्रबन्ध आदि में पारंपरिक संस्थाओं द्वारा नियमित रूप से पारंपरिक डिग्री (उपाधि) प्रदान करता है, से स्पष्ट रूप से अन्तर करने योग्य हो।

4) ज्ञान की उन्नति तथा एक पर्याप्त पूर्णकालिक संकाय/शोधकर्ता (पीएचडी और पोस्ट डॉक्टरल) द्वारा विविध विषयों में विभिन्न शोधकार्यों के माध्यम से इस का प्रचार करने हेतु उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षण तथा शोध सुविधाएं प्रदान करना है।

5) विभिन्न कार्यकर्मों के अध्ययन तथा बौद्ध दर्शन की विविध शाखाओं एवं सांस्कृतिक अध्ययन के क्षेत्र में शोधकार्य करके उपाधि और प्रमाणपत्र प्रदान करने हेतु अनुदेश देना है।

6) शोध, प्रकाशन, जीर्णोद्धार और शिक्षा की उन्नति के लिए सुविधा प्रदान करना तथा बौद्ध दर्शन की ऐसी शाखाओं के ज्ञान का प्रसार करना जिन्हें संस्थान उचित समझे।

7) विश्व के किसी भी भाग में स्थित शैक्षिक और अन्य संस्थानों के साथ सहयोग करना, जिनके उद्देश्य इस संस्थान के उद्देश्य के समान हों। सहयोग इस प्रकार करना जिससे कि उनके समान उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए लाभकारी हों।

8) देश विदेश से बौद्ध दर्शन एवं संस्कृति के विद्वानों को बौद्ध दर्शन तथा संस्कृति पर भाषण, संगोष्ठी और विचार विमर्श के लिए आमंत्रित करना है।

9) ऐसे सभी कार्यों को करना जो कि संस्थान के आंशिक या सम्पूर्ण उद्देश्यों को प्राप्त कराने में आवश्यक, आकस्मिक एवं लाभकारी हों।

3. सोसाइटी

संस्थान को मानित विश्वविद्यालय के रूप में मान्यता प्राप्त होने के बाद संस्था के संगम ज्ञापन, नियम एवं विनियम को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (संस्थान के मानित विश्वविद्यालय संशोधन विनियम–2014 तथा तदनुसार 2016 में संशोधित), के अनुसार संशोधित करने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए संस्था के संगम ज्ञापन, नियम एवं विनियम को संशोधित किया गया। संशोधित नियमों के अनुसार संस्थान के कार्य के मार्गदर्शन एवं पर्यवेक्षण के लिए एक सोसिएटी के गठन करने की आवश्यकता होती है। तदनुसार संस्थान ने उनके कार्य के पर्यवेक्षण एवं मार्गदर्शन के लिए संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव की अध्यक्षता में एक सोसिएटी का गठन किया है। मौजूदा सोसाइटी की संरचना को परिशिष्ट पृष्ठ संख्या 31 पर दर्शाया गया है।

4. प्रबंधन

संस्थान का प्रबंधन निदेश केंद्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की अध्यक्षता में गठित एक प्रबंधकारिणी के द्वारा सम्पन्न होता है। इस प्रबंधकारिणी के सदस्यों का संगठन विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, संघों, विश्वविद्यालयों तथा बौद्ध विद्वानों के प्रतिनिधियों से बना है। प्रबंधकारिणी के पुनर्गठन की पहली बैठक से लेकर सदस्यों के कार्यकाल की अवधि तीन साल है। संस्थान के कुल सचिव इस प्रबंधकारिणी के सदस्य–सचिव हैं। वर्तमान में इस प्रबंधकारिणी की संरचना पृष्ठ संख्या 33 पर परिशिष्ट के रूप में है। इस प्रबंधकारिणी की बैठक हर छः महीने के बाद आयोजित की जाती है। प्रबंधकारिणी के पास अधिकार का प्रयोग करने या सभी कर्तव्यों का पालन करने, कार्य करने तथा संस्था के संगम–ज्ञापन में बताये गये उद्देश्यों को प्रभाव में लाने के लिए जो भी आवश्यक या परिणामी और आकस्मिक कार्य हों उन सबको करने का अधिकार है। पुनरपि भारत सरकार समय–समय पर महत्वपूर्ण नीति के मामलों में निर्देश दे सकती है, जिस का अनुसरण प्रबंधकारिणी को करना होगा।

5. उप–समितियों की संरचना

प्रबंधकारिणी के निर्देशों के समुचित पालन हेतु तथा शैक्षिक, वित्त, अनुसंधान अैर प्रकाशन आदि के मामलों में सहयोग करने के लिए अनेक उप–समितियों की संरचना की गई है। इन उप–समितियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

1) ***विद्या परिषद :*** संगम–ज्ञापन और नियमों एवं विनियमों के खंड 14 के अनुसार, संस्थान के अकादमिक मामलों में बोर्ड को सलाह देने के लिए प्रतिष्ठित विद्वानों और शिक्षाविदों से मिलकर एक अकादमिक परिषद की संरचना की गई है। संबंधित क्षेत्रों में बोर्ड को सलाह देने की आवश्यकता के अनुसार विद्या परिषदकी एक शैक्षणिक वर्ष में कम से कम तीन बार बैठक होती है। शैक्षणिक परिषद की बैठकें 13 मार्च, 2018 और 17 अप्रैल, 2018 को आयोजित की गई। इस परिषद की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के रूप में पृष्ठ सं. 34 पर दर्शाया गया है।

2) ***वित्त समिति :*** संस्था केसंगम ज्ञापन और संस्थान के नियम एवं विनियम के अनुसार कुलपति की अध्यक्षता में एक वित्त समिति का गठन किया जाता है। संस्थान की संपत्ति और निधियों के प्रशासन से संबंधित मामलों में निदेशक और प्रबंधन बोर्ड को सलाह देने के लिए समिति की वर्ष में एक या दो बार इस समिति का बैठक होती है। इस समिति की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के रूप में पृष्ठ सं. 35 पर दर्शाया गया है।

3) ***प्रकाशन समिति :*** संस्थान हिमालय की कला, संस्कृति एवं भाषा से सम्बद्ध दुर्लभ ग्रन्थों तथा पाण्डुलिपियों का प्रकाशन भी करता रहा है। इन दुर्लभ ग्रन्थों/पाण्डुलिपियों को प्रेस में भेजने से पूर्व इनके प्रकाशन की समीक्षा एवं उपादेयता प्रमाणित करने के लिए प्रकाशन समिति के समक्ष रखा जाता है।यह समिति प्रकाशन के क्षेत्र में प्रख्यात विद्वानों एवं विशेषज्ञों को जोड़कर बनी है। इस समिति की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के रूप में पृष्ठ सं. 36 पर दर्शाया गया है।

4) ***पुस्तकालय समिति :*** पुस्तकालय समिति पुस्तकालय के क्षेत्र में जानकारी प्राप्त विशेषज्ञों से बनी है और यह समिति समय–समय पर ग्रन्थालय की प्रगति एवं उत्कृष्टता के लिए सिफारिश करती है, जिसमें अतिरिक्त कर्मचारी, यंत्रों (मशीन) एवं उपकरणों, डिजिटलीकरण और सूचीपत्र आदि की आवश्यकतायें सम्मिलित हैं। इस समिति की वर्तमान संरचना को परिशिष्ट के रूप में पृष्ठ सं. 37 पर दर्शाया गया है।

5) ***शोध समिति :*** संस्थान की शोध–समितिृोधवृत्ति हेतु शोध–छात्रों का चयन करने के लिए साक्षात्कार का कार्य–संचालन करती है और विषय–संक्षेप तथाशोध–कार्य की प्रगति की समीक्षा करती है। इस समिति की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के रूप में पृष्ठ सं. 38 परदर्शाया गयी है।

6. निधि

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत संस्कृति विभाग इस संस्थान को सम्पूर्ण

आर्थिक अनुदान प्रदान करता है। वर्ष 2020–21 के लिए संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार ने प्रबन्धन समिति, के.बौ.वि.वि., लेह द्वारा अनुमोदित संस्थान की विभिन्न योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए ₹2656.40 लाख स्वीकृत किये हैं।

7. कर्मचारी संख्या

संस्थान के प्रशासनिक अधिकारी तथा अन्य कर्मचारियों के सहयोग से संस्थान के निदेशक एक प्रमुख प्रशासनिक अधिकारी के रूप में संस्थान का पर्यवेक्षण करते हैं। केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के कर्मचारियों की कोटि–वार संख्या, शैक्षणिक एवं शिक्षणेतर श्रेणी का पृथक् विवरण परिशिष्ट पृष्ठ संख्या 39 पर दर्शाया गया है।

8. संकाय तथा विभाग

इस संस्थान को विश्वविद्यालय की पद्धति पर सुचारू तथा प्रभावी रूप से चलाने के लिए बौद्ध विहारों की परम्परा, पाँच महाविद्याओं के आधार पर संस्थान में संकायों एवं विभागों की स्थापना की गयी है, जो निम्न प्रकार से है :

1) अध्यात्म तथा न्यायविद्या संकाय (Faculty of Philosophy and Logic)
2) शब्दविद्या संकाय (Faculty of Literature and Language)
3) सोवा रिगपा (भोट चिकित्सा) एवं शिल्प विद्या संकाय (Faculty of Bhot Medical Science and Arts)
4) आधुनिक विद्या संकाय (Faculty of Modern Studies)

इस के अतिरिक्त उक्त संकायों को इनके अध्ययन के अनुसार विभिन्न विभागों में विभाजित किया गया है, जिनका वर्णन निम्नप्रकार है :

1) अध्यात्म तथा न्यायविद्या संकाय (Faculty of Philosophy and Logic)

यह संकाय मूलशास्त्र एवं विभिन्न सम्प्रदायों की शाखाओं सहित तीन विभागों से बना है। बौद्ध विहारों की प्रणाली के अनुसार अध्यात्म तथा न्यायविद्या दो स्वतन्त्र विद्याएँ हैं, जिनके अनेक विभाग हैं, परन्तु संस्थान के पाठ्यक्रम की अनुकूलता के लिए इनको साथ रखा गया है। उपरोक्त संकाय के अंतर्गत निम्न विभाग हैं–

(क) भोट बौद्ध दर्शन विभाग
(ख) बौद्धदर्शन विभाग (संस्कृत माध्यम)
(ग) सम्प्रदाय शास्त्र विभाग

2) शब्दविद्या संकाय (Faculty of Literature and Languages)

यह संकाय विभिन्न विभागों से बना है, जिनका विवरण निम्नलिखित है:

(क) भोट साहित्य विभाग
(ख) शास्त्रीय भाषाओं का विभाग (संस्कृत और पालि)
(ग) आधुनिक भाषाओं का विभाग (अंग्रेजी और हिन्दी)

3) सोवा रिगपा (भोट चिकित्सा) एवं शिल्पविद्या संकाय (Faculty of Bhot Medical Sciece and Art)

संस्थान हिमालय की परम्परागत कला तथा संस्कृति को संरक्षण देने और उन्नत करने में अत्यधिक रुचि ले रहा है। तदनुसार इस क्षेत्र की कला तथा संस्कृति को संरक्षित एवं उन्नत करने हेतु निम्न विभागों की स्थापना की गई है :

(क) सोवा रिगपा तथा ज्योतिष विभाग : रोगियों को जड़ी–बूटियों से निर्मित औषधियाँ उपलब्ध कराना इस क्षेत्र की सैकड़ों वर्ष से चली आ रही प्राचीन परम्परा है। इस प्रदेश में जब ऐलोपेथिक दवा नहीं थी, उस समय अमची विद्या (भोट चिकित्सा) ही अधिक प्रसिद्ध थी। वर्तमान समय में भी इस प्रदेश के लोग अमची (भोट चिकित्सा) को सर्वाधिक उपयोगी मानते हैं, क्योंकि इससे दुष्प्रभाव नहीं होते हैं। अब भारत सरकार ने सोवा रिगपा को एक पारंपरिक और उपयोगी चिकित्सा प्रणालियों के रूप में मान्यता दी है। इसलिए लोग सोवा रिगपा चिकित्सा प्रणाली को चुनते हैं। उक्त बातों को ध्यान में रखकर संस्थान इच्छुक विद्यार्थियों को अमची (भोट चिकित्सा विद्या) की शिक्षा प्रदान कर रहा है। बारहवीं उत्तीर्ण विद्यार्थी, जिन्हें भोटी भाषा का पर्याप्त ज्ञान है, केवल उन्हें ही छः वर्ष के अमची (भोट चिकित्सा विद्या) पाठ्यक्रम के लिए उपयुक्त विद्यार्थी माना जाता है। ऐसे अनेक विद्यार्थी हैं, जिन्हें उक्त उपाधि प्राप्त हुई है और वे आज सरकारीएवं गैर–सरकारी पदों पर अमची कार्य कर रहे हैं।

(ख) हिमालयी क्षेत्र के कला और शिल्प विभाग

1. पारम्परिक थंका / चित्रकला विभाग : चित्रकला इस क्षेत्र में बहुत प्रसिद्ध है। लदाख के बौद्ध विहारों में यह कला अत्यन्त प्रसिद्ध है, जिनमें विभिन्न प्रकार के थंका–चित्र एवं भित्ति–चित्र दिखाई पड़ते हैं। अलची विहार के भित्ति–चित्र तथा लामायुर गोनपा के थंका–चित्र बहुत प्रसिद्ध हैं। इन विहारों में कुछ थंकाएँ हज़ारों वर्ष पुरानी हैं, जिनका आज भी दर्शन किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त यहाँ के प्रत्येक गाँव में एक गोनपा अवश्य दिखाई पड़ता है, जिसमें थंकाओं, भित्ति–चित्रों एवं मूर्तियों का अपार भण्डार है। गर्मी के समय में दुनिया भर से पर्यटक लदाख में स्थित थंकाओं, भित्ति–चित्रों, मूर्तियों तथा अन्य धार्मिक वस्तुओं से सुसज्जित बौद्ध विहारों का दर्शन करने आते हैं। संस्थान ने विद्यार्थियों के प्रशिक्षणार्थ

भोटी चित्रकला पाठ्यक्रम की व्यवस्था कर रखी है। थंका बनाने की सदियों पुरानी परम्परा को जीवित रखने के लिए अनेक विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

2. पारम्परिक मूर्ति–कला विभाग : लदाख क्षेत्र में मिट्टी से मूर्तियों तथा मुखौटों का निर्माण करना एक सामान्य बात है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है कि यहाँ के बौद्ध विहार मूर्तियों एवं मुखौटों से परिपूर्ण हैं। यहाँ के प्रत्येक विहार में विशेष तिथि पर धार्मिक त्यौहार अर्थात् गुस्तोर/दोस्मोछे/छे–चु मनाये जाते हैं। इस अवसर पर विभिन्न प्रकार के बुद्धों, बोधिसत्वों, इष्टदेवों आदि की वेश–भूषा एवं मुखौटा धारण कर मुखौटा–नृत्य जो छमस् के रूप में प्रसिद्ध है, का प्रदर्शन किया जाता है। संस्थान ने विद्यार्थियों को बुद्धों, बोधिसत्वों, देवी–देवताओं, इष्टदेवों आदि की मूर्तियों के निर्माण हेतु कला के प्रशिक्षणार्थ व्यवस्था कर रखी है। इच्छुक विद्यार्थी, जो दसवीं कक्षा उत्तीर्ण कर चुके है, उन्हें छः वर्ष का मूर्तिकला प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। वर्तमान में अनेक विद्यार्थी मूर्ति एवं मुखौटा निर्माण कला के अन्तर्गत प्रशिक्षण ले रहे हैं।

3. पारम्परिक काष्ठकला विभाग : प्राचीन काल में लदाख में पुस्तकों के प्रकाशन हेतु कोई मुद्रण यन्त्र उपलब्ध नहीं था। ऐसी स्थिति में लोग लकड़ी के ब्लॉकों से धार्मिक ग्रन्थों या अन्यान्य ग्रन्थों की प्रतिलिपि प्राप्त कर लेते थे। धार्मिकग्रन्थों की लिपियाँ विशेषकर कठोर लकड़ी के ब्लॉक पर नियमित रूप से खोदी जाती हैं, जिससे बाद में पढ़ने के लिए किसी कागज़ पर छपायी की जा सके। एक बार किसी लकड़ी के ब्लॉक पर खुदाई हो जाने पर ज़ेरक्स मशीन की तरह उससे हज़ारों बार प्रतिलिपियाँ निकाली जा सकती हैं। प्राचीन काल में लदाख में यह कला अत्यन्त प्रसिद्ध थी। यहाँ बौद्धविहारों एवं बौद्ध गृहों के छत पर पाँच रंगों की पताकायें फहराने की परम्परा है, जिन्हें दरचोग के नाम से जाना जाता है और मुख्य द्वारों पर बड़ी लम्बी पताका फहरायी जाती हैं जो दरछेन कहलाती हैं। कपड़े की पताकाओं पर लकड़ी के ब्लॉकों से सूत्रपाठ, मन्त्र, लुङ्ता एवं ग्यलछ़न चेमो (द्वजाग्र) छापे जाते हैं, जो आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक हैं। उक्त काष्ठकला के निरन्तर संरक्षण के उद्देश्य से संस्थान ने एक छः वर्षीय काष्ठकला पाठ्यक्रम की व्यवस्था कर रखी है। यहाँ छात्र लकड़ी के ब्लॉक के निर्माण के अतिरिक्त साज–सज्जा वस्तु, यथा– ड्रेगन, पक्षी, सिंह, घोड़ा आदि जन्तुओं एवं अन्य वस्तुओं की निर्माण कला का भी प्रशिक्षण लेते हैं। लदाख क्षेत्र में यह कला अत्यन्त प्रसिद्ध है और व्यक्ति अपनी जीविका के लिए इसे अच्छा क्षेत्र मानता है।

2) आधुनिक विद्या संकाय (Faculty of Modern Studies)

इस संकाय के अर्न्तगत तीन विभाग हैं, जो निम्न प्रकार हैं:

(क) बौद्ध पुराणेतिहास विभाग
(ख) तुलनात्मक दर्शन विभाग
(ग) सामाजिक विज्ञान विभाग

9. नवीन प्रवेश

संस्थान के निर्धारित प्रवेश के नियमों के अन्तर्गत प्रवेश समिति द्वारा साक्षात्कार के आधार पर छात्रों को कक्षा 6 से 9 तक में प्रवेश दिया जाता है। संस्थान के शाखा गोनपा विद्यालयों के छात्रों को संस्थान में सीधे प्रवेश दिया जाता है। संस्थान के छः वर्षीय पाठ्यक्रम वाले अमची, तिब्बती थंका चित्रकला, मूर्तिकला तथा काष्ठ कला में भी सीट की उपलब्धता के आधार पर प्रवेश दिया जाता है।

10. संगोष्ठी/परिसंवाद/कार्यशाला

केंद्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह देश में बौद्ध अध्ययन के लिए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण संस्थानों में से एक है। विगत वर्षों में विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहुंच बढ़ा रहा है। हालाँकि, कोविड–19 के कारण, संस्थान के कई कार्यक्रम स्थगित हो गए हैं, जिनमें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार शामिल हैं। इस अपरिहार्य स्थिति में संस्थान ने इसे एक अवसर के रूप में लिय और सोशल मीडिया के माध्यम से ऑनलाइन पाठ्यक्रम, वेबिनार और व्याख्यान श्रृंखला शुरू की।

कोविड–19 महामारी के दौरान दुनिया भर के लगभग सभी उच्च शिक्षा संस्थानों (एच.ई.आई.) ने बड़ी संख्या में शिक्षकों और विद्यार्थियों को शामिल करते हुए ऑनलाइन शिक्षण, ऑनलाइन संगोष्ठि, कार्यशालाएं, वेबिनार शुरू किए हैं। यू.जी.सी. और संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार पत्राचार के अनुपालन करते हुए केंद्रीय बौद्ध विद्या संस्थान (सम विश्वविद्यालय), लेह ने साप्ताहिक वेबिनार और व्याख्यान ऑनलाइ भी शुरू किए हैं। वेबिनार संस्थान के विभागों द्वारा सी. आई.बी.एस. फेसबुक पेज/गूगल मीट, जूम आदि के माध्यम से संस्थान द्वारा तैयार किए गए दिशा–निर्देशों का पालन करते हुए आयोजित किए जा रहे हैं। विषयों का चयन संबंधित विभागों द्वारा संस्थान के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए किया जाता है और विभाग का विषय क्षेत्र न केवल शिक्षकों और छात्रों को बल्कि दुनिया में अनेक दर्शकों को भी लाभान्वित करेगा।

(क) प्रथम राष्ट्रीय वेबिनार भोटी भाषा और साहित्य विभाग द्वारा 8 जून, 2020 को "भोटी भाषा और यूटी लद्दाख" विषय पर आयोजित किया गया था। इसकी मेजबानी भाटी भाषा और साहित्य विभाग के प्रमुख खनपो कोनचोक थुपस्तान ने की थी। पहले वक्ता प्रो. कोनचोक वांगदु, निदेशक, के.बौ.वि.सं. ने क्षेत्र की समृद्ध संस्कृति और विरासत के साथ–साथ प्राचीन भारतीय ज्ञान, विशेष रूप से बौद्ध दर्शन की नालंदा परंपरा को जीवित रखने के लिए भोटी भाषा के महत्व पर अपनी बात प्रस्तुत की। द्वितीय वक्ता के.बौ.वि.सं. से वानिवृत्त प्रोफेसर, प्रो. जमयांग ग्यालछ़न ने लद्दाख में भाटी पाठ्य पुस्तकों के विकास और स्कूलों में भोटी भाषा में अधिक पुस्तकों को शुरू करने की आवश्यकता के बारे में बात की ताकि छात्रों में उनकी अपनी भाषा,

साहित्य और संस्कृति के लिए रुचि पैदा की जा सके। ज्ञानवर्धक वार्ता के बाद प्रश्नोत्तर भी हुए। यह वेबिनार केंद्रीय बौद्ध विद्या संस्थान के फेसबुक पेज के माध्यम से आयोजित किया गया था। वेबिनार को तकनीकी रूप से सॉफ्टवेयर इंजीनियर सुश्री कुंजांग डोलमा और मीडिया विशेषज्ञ समस्तन ज्ञुरमेद ने सहयोग की।

(ख) दूसरा वेबिनार सामाजिक विज्ञान विभाग द्वारा 13 जून, 2020 को जूम के माध्यम से "भारत में बौद्ध धर्म का पुनरूद्धार" विषय पर आयोजित किया गया था और इसे सीआईबीएस फेसबुक पेज के माध्यम से भी साझा किया गया था। राष्ट्रीय वेबिनार सामाजिक विज्ञान विभाग के प्रमुख डॉ. संजीव कुमार गौतम द्वारा आयोजित किया गया था, उसी विभाग से राजनीति विज्ञान के व्याख्याता श्री छेरिंग छोलदन द्वारा सहयोग किया गया था। संस्थान के निदेशक प्रो. कोनचोक वांगदु ने उट्घाटन भाषण दिया और उसके बाद डॉ. संजीव कुमार गौतम ने मुख्य भाषण दिया।

मुख्य वक्ता प्रो. जिगर मोहम्मद, सामाजिक विज्ञान के पूर्व डीन, जम्मू विश्वविद्यालय और प्रो. शूरा दारापुरी, इतिहास विभाग के पूर्व प्रमुख, बीबीएयू (सेंट्रल यूनिवर्सिटी) लखनऊ, यूपी ने "भारत में बौद्ध धर्म का पुनरुद्धार" विषय पर अपनी प्रस्तुतियाँ प्रस्तुत कीं। उक्त विषय के हर पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए दोनों ने प्रभावशाली और प्रेरक आलेख प्रस्तुत किए हैं। इसके बाद प्रश्नोत्तर हुए। वेबिनार के लिए प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर, सहायक प्रोफेसर, शोध विद्वानों, छात्रों सहित 700 से अधिक प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया है। इसे सीआईबीएस के आधिकारिक फेसबुक पेज के माध्यम से भी साझा किया गया था। अंत में श्री स्तानज़ीन छ़ेतन ने वेबिनार का परिणाम प्रस्तुत किया, जिसके बाद सामाजिक विज्ञान विभाग, के.बौ.वि.सं. के संकाय सदस्य सुश्री दिस्कीत छोरोल द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव दिया गया।

वेबिनार को तकनीकी रूप से सुश्री कुंजांग डोलमा, सॉफ्टवेयर इंजीनियर, जंयांग लन्डुब, कंप्यूटर प्रशिक्षक और समस्तन ग्युरमेद, मीडिया विशेषज्ञ, सीआईबीएस और डॉ रश्मी गौतम द्वारा सहयोग किया गया था।

संस्थान के निदेशक, प्रो. कोनचोक वांगदु ने वेबिनार को सफल बनाने के लिए विभागाध्यक्षों, वक्ताओं, सहयोगियों और दर्शकों को धन्यवाद दिया। वह चाहते हैं कि वार्ता प्रस्तुतियाँ न केवल इस कठिन समय के दौरान बल्कि आने वाले समय में भी व्यक्तियों के साथ–साथ समाज को भी लाभान्वित होंगे।

(ग) तीसरे राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन 19 जून 2020 को बौद्ध पुराण इतिहास विभाग, कें.बौ.वि.सं. द्वारा "लद्दाख का इतिहास 7 वीं–12 वीं शताब्दी" विषय पर किया गया था। वेबिनार का आयोजन बौद्ध पुराण इतिहास विभाग के आध्यक्ष खनपो शेडुब कोनचोक ने की थी। प्रथम वक्ता भिक्षु थुपस्तान पलदान ने लोर्च़ावा रिनचेन ज़ांगपो और उनके योगदान पर ध्यान केंद्रित करते हुए अपना पत्र प्रस्तुत की। द्वितीय वक्ता डॉ. स्तनज़ीन मिनग्युर, प्राध्यापक कें.बौ.वि.सं. ने भी

उपर्युक्त विषय पर अपनी प्रस्तुति प्रस्तुत की। ज्ञानवर्धक प्रस्तुतियों के बाद प्रश्नोत्तर हुए। वेबिनार जूम ऐप के माध्यम से आयोजित किया गया था और अधिकतम दर्शकों के लाभ के लिए सीआईबीएस फेसबुक पेज के माध्यम से साझा किया गया था।

(घ) संस्थान का चौथा वेबिनार कार्यक्रम भोट बौद्ध दर्शन विभाग द्वारा जूम के माध्यम से "प्रतीत्यसमुत्पन्न और कोविड–19 की अवधारणा" विषय पर आयोजित किया गया था और इसे सीआईबीएस फेसबुक पेज के माध्यम से भी साझा किया गया था। इस राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन खनपो नामदक, प्राध्यापक के.बौ.वि.सं. ने की। वक्ताओं में डॉ. उर्ज्ञान डदुल, रीडर, के.बौ.वि.सं. और गेशे डाकपा कलसंग, भोट बौद्ध दर्शन विभाग के प्रमुख शामिल थे। उक्त विषय के हर पहलू को छूते हुए दोनों वक्ताओं ने प्रभावशाली और प्रेरक पत्र प्रस्तुत किया। इसके बाद प्रश्नोत्तर भी हुए।

इस संगोष्ठि के विषय का चयन संबंधित विभागों द्वारा संस्थान के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए किया गया था ताकि न केवल शिक्षकों और छात्रों को बलिक दुनिया में बडे दर्शकों को भी लाभ मिल सके।

वेबिनार को तकनीकी रूप से सुश्री कुंजांग डोलमा, सॉफ्टवेयर इंजीनियर और समस्तन ग्युरमेद, मीडिया विशेषज्ञ, सीआईबीएस द्वारा सहयोग किया गया था।

संस्थान के निदेशक, प्रो. कोनचोक वांगदु ने वेबिनार को सफल बनाने के लिए विभागाध्यक्षों, वक्ताओं, सहयोगियों और दर्शकों को धन्यवाद दिया।

(ङ) संस्थान का राष्ट्रीय वेबिनार कार्यक्रम, श्रृंखला में पांचवां, संप्रदाय शास्त्र विभाग द्वारा "चार प्रमुख तिब्बती बौद्ध परंपराओं का इतिहास और उन परंपराओं को धारण करने, बुद्ध धर्म को बनाए रखने में कैसे लाभ होता है" विषय पर 11 जुलाई, 2020 को जूम मीटिंग और संस्थान के फेसबुक पेज के माध्यम से आयोजित किया गया था। गेशे लोबजङ छुलठीम, प्राध्यापक, के.बौ.वि.सं., खनपो शेडुब कोनचोक, प्राध्यापक, खनपो जंयांग छुलठीम, माथो गोनपा ने मुख्य विषय से संबंधित अपनी प्रस्तुति प्रस्तुत की। इस वेबिनार का आयोजन खनपो जमयांग कुलज़ङ, प्राध्यापक और विभागाध्यक्ष, सम्प्रदाय शास्त्र विभाग, के.बौ.वि.सं. ने किया। जूम और सीआईबीएस फेसबुक पेज के माध्यम से विशेषज्ञों द्वारा ज्ञानवर्धक और सूचनात्मक प्रस्तुतियों के बाद प्रश्नोत्तर भी हुए।

(च) संस्थान का राष्ट्रीय वेबिनार कार्यक्रम, श्रृंखला में छठा, 7 अगस्त, 2020 को सोवा रिगपा विभाग, के.बौ.वि.सं. द्वारा "कोविड–19 की रोकथाम पर सोवा रिगपा का परिप्रेक्ष्य और स्वस्थ मन और शरीर के प्रबंधन" विषय पर आयोजित किया गया था। डॉ. छेरिङ फुनछोग, सेवानिवृत्त, मुख्य अमची, एसएनएम अस्पताल और डॉ. पदमा ग्युरमेद, निदेशक, राष्ट्रीय सोवा रिगपा अतिथि वक्ता थे। इस वेबिनार कार्यक्रम का आयोजन सोवा रिगपा विभाग के रीडर और एचओडी

डॉ. ठीनले यङजोर, ने की। ज्ञानवर्धक और सूचनात्मक प्रस्तुतियों के बाद प्रश्नोत्तर भी हुए। यह वेबिनार जूम और सीआईबीएस फेसबुक पेज के माध्यम से आयोजित किया गया था।

(छ) संस्थान का राष्ट्रीय वेबिनार कार्यक्रम सातवीं श्रृंखला का आयोजन संस्कृत बौद्ध दर्शन विभाग, के.बौ.वि.सं. द्वारा 10 अगस्त, 2020 को "वर्तमसमय में बौद्धधर्मदर्शन का प्रासंगिक" विषय पर किया गया था। अतिथि वक्ता प्रो रमेश कुमार द्विवेदी, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी और प्रो.प्रद्युम्न शाह सिंह, विभागाध्यक्ष, जैन–बुद्ध दर्शन विभाग, बनारस हिंदु विश्वविद्यालय ने उपरोक्त विषय पर अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। वेबिनार कार्यक्रम का आयोजन के.बौ.वि.सं. के प्राध्यापक राज किरण ने की। ज्ञानवर्धक वार्ता और प्रस्तुतियों के बाद प्रश्नोत्तर भी हुए। वेबिनार जूम और सीआईबीएस फेसबुक पेज के माध्यम से आयोजित किया गया था।

(ज) संस्थान का राष्ट्रीय वेबिनार कार्यक्रम, आठवीं श्रृंखला में सामाजिक विज्ञान विभाग (राजनीति विज्ञान) सीआईबीएस द्वारा 31 अगस्त, 2020 को "भारतीय संविधान पर बौद्ध धर्म के प्रभाव" पर आयोजित किया गया था। डॉ. थुगतन नेगी, सहायक प्रोफेसर, हिमाचल प्रदेश के केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, श्रीमती कोनचोक छोरोल, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, ईजेएम कॉलेज लेह, श्री छ़ेवांग ज्ञालछ़न सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, सरकारी डिग्री कॉलेज, करगील, डॉ. स्तनज़ीन छोसटक, सहायक प्रोफेसर, विधि संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय ने उक्त विषय पर अपनी प्रस्तुतियाँ प्रस्तुत कीं। वेबिनार का संचालन डॉ छ़ेरिङ छोलदान, प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान, के.बौ.वि.सं. द्वारा किया गया था। ज्ञानवर्धक और सूचनात्मक प्रस्तुतियों के बाद प्रश्नोत्तर भी हुए। यह वेबिनार जूम और सीआईबीएस फेसबुक पेज के माध्यम से आयोजित किया गया था।

(झ) संस्थान का राष्ट्रीय वेबिनार कार्यक्रम, नौवीं श्रृंखला में तुलनात्मक दर्शन विभाग, के.बौ.वि.सं. द्वारा 4 सितंबर, 2020 को "भारतीय शास्त्रीय शिक्षा प्रणाली और ई–लर्निंगः चुनौतियां और समाधान" विषय पर आयोजित किया गया था। प्रो. रजनीश कुमार शुक्ला, कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्ध, महाराष्ट्र और प्रोफेसर सच्चिनंदा मिश्रा, दर्शन और धार्मिक विभाग, काशी हिंदु विश्वविद्यालय, वाराणसी ने अतिथि वक्ताओं के रूप में भाग लिया और निर्दिष्ट विषय पर अपनी प्रस्तुतियाँ प्रस्तुत कीं। संथान के निदेशक प्रो. कोनचोक वांगदु, ने परिचयात्मक भाषण दिया और डॉ. विपिन कुमार पांडे, तुलनात्मक दर्शन विभाग, के.बौ.वि. सं. के प्रमुख ने स्वागत भाषण दिया। संपूर्ण वेबिनार का आयोजन श्रीमती जिगमेद ल्हामो, प्राध्यापक, तुलनात्मक दर्शन विभाग, के.बौ.वि.सं. और भिक्षु शांता नेगी, रिसर्च स्कॉलर, के.बौ. वि.सं. द्वारा किया गया। ज्ञानवर्धक और सूचनात्मक प्रस्तुतियों के बाद प्रश्नोत्तर भी हुए। यह वेबिनार जूम और सीआईबीएस फेसबुक पेज के माध्यम से आयोजित किया गया था।

(ञ) भोट बौद्ध दर्शन विभाग द्वारा 7 और 8 सितंबर, 2020 को "प्रमुख बौद्ध ग्रंथों और इसकी प्रथाओं के कठिन और महत्वपूर्ण बिंदु" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार भी आयोजित किया

गया था। राष्ट्रीय वेबिनार में कई विद्वानों और विशेषज्ञों ने भाग लिया, जिनमें खेन रिनपोछे लोबज़ांग ग्यालछ़ेन, प्रो कोनचोक वांगडु, प्रो वांगछुक दोरजे, खनपो टशी छ़ेरिङ, डॉ. लोबज़ङ छ़ेवङ, गेशे डकपा कलसङ, लोपोन छुलठीम ग्युरमेद, खनपो डकपा सिंगे, गेशे येशे लुडुब, गेशे लोबज़ङ वङछुग, खनपो कोनछोक नमदक, खनपो शडुप कोनछोक और गेशे कोनछोक नमदक शामिल थे। उक्त मुख्य विषय के विभिन्न महलुओं पर विशेषज्ञों और विद्वानों ने अपनी प्रस्तुतियाँ प्रस्तुत की। यह वेबिनार, जूम और सीआईबीएस फेसबुक पेज के माध्यम से आयोजित किया गया था।

इस संगोष्ठि के विषय का चयन संबंधित विभागों द्वारा संस्थान के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए किया गया था ताकि न केवल शिक्षकों और छात्रों को बलिक दुनिया में बडे दर्शकों को भी लाभ मिल सके।

वेबिनार को तकनीकी रूप से सुश्री कुंजांग डोलमा, सॉफ्टवेयर इंजीनियर और समस्तन ग्युरमेद, मीडिया विशेषज्ञ, सीआईबीएस द्वारा सहयोग किया गया था।

निदेशक प्रो. कोनचोक वांगदु ने राष्ट्रीय वेबिनार को सफल बनाने के लिए सभी विभागाध्यक्षों, आयोजकों, वक्ताओं और दर्शकों को धन्यवाद दिया।

11. छात्र विनियमक कार्यक्रम

केंद्रीय बौद्ध विद्य संस्थान, लेह शीतकालीन अवकाश के दौरान केंद्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान के साथ छात्र विनियमक कार्यक्रम का आयोजन करता था। हालांकि, वर्ष दौरान इस कार्यक्रम का आयोजन कोविड–19 महामारी के कारण नहीं किया गया था।

12. शैक्षिक यात्रा

केंद्रीय बौद्ध विद्य संस्थान (सम विश्वविद्यालय) लेह प्रत्येक शीतकालीन अवकाश के दौरान छात्रों के लिए भारत दर्शन (शैक्षिक यात्रा) का आयोजन करता है। भारत दर्शन के दौरान छात्र भारत के विभिन्न राज्यों में महत्पूर्ण ऐतिहासिक और पुरातात्विक स्थलों का भ्रमण करते हैं। इस वर्ष (2020–21) कोविड–19 के कारण शैक्षिक यात्रा का आयोजन संभव नहीं हो सका।

13. प्रकाशन

संस्थान ने अब तक विभिन्न विषयों पर 85 दुर्लभ एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन किया है जिनमें अखिल भारतीय परिसंवाद गोष्ठी का निबन्ध संकलन (लदाख–प्रभा) का प्रकाशन सम्मिलित है। वर्ष 20120–21 के दौरान संस्थान ने निम्नलिखित गन्थों का प्रकाशन किया है :

(क) केंद्रीय बौद्ध विद्य संस्थान का विश्वविद्यालय कुल गीत
(ख) ज्ञान लोक और अनुसंधान पद्धति
(ग) केंद्रीय बौद्ध विद्य संस्थान, लेह का इतिहास
(घ) बौद्ध अध्ययन के राष्ट्रीय जर्नल

14. शोध कार्य

संस्थान ने रिसर्च स्कॉलर्स के लिए आठ संस्थागत फेलोशिप की स्थापन की है। अनुसंधान का कार्य विभिन्न विषयों अर्थात बौद्ध दर्शन, हिमालयी बौद्ध संस्कृति, और संबंधित क्षेत्रों में संचालित किए जा रहे हैं। तदनुसार, वर्तमान में नौ शोधार्थी पीएच.डी. के लिए शोध कर रहे हैं।

15. परिसर

यह संस्थान लेह शहर के दक्षिण की ओर आठ किलोमीटर दूर चोगलमसर में सिंधु नदी के तट पर स्थित है। इसके दो परिसर हैं–नया और पुराना परिसर। पुराना परिसर 23 कनाल के क्षेत्र फल में स्थित है। इसमें कक्षा 6 से 8 तक के कनिष्ठ छात्रों के लिए कक्षाएँ चलायी जाती हैं। यह विद्यालय प्रशिक्षित स्नातक (टी.जी.टी.) तथा अन्य कर्मचारियों के सहयोग से एक प्रधान अध्यापक के प्रभार में चलाया जाता है। इसमें शैक्षणिक विभाग, एक छोटा सभाभवन, कार्यालय तथा बच्चों के लिए पुस्तकालय हैं। पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र, पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र जैसी संस्थान की कुछ परियोजनाएँ पुराने परिसर में कार्यरत हैं। इस परिसर में एक अतिथि भवन है, जिसमें 20 अतिथि रुक सकते हैं।

नया परिसर पुराने परिसर से आधा किलोमीटर दूरी पर स्थित है। इस में संस्थान का पृथक् कक्षा–भवन, प्रशासनिक भवन, पुस्तकालय तथा तीन छात्रावास, हैं जिनमें सौ–सौ विद्यार्थियों के रहने की क्षमता है, जो भिक्षुओं, छात्रों तथा छात्राओं को रहने के लिए अलग–अलग दिये गये हैं। नये परिसर में 60 कर्मचारी आवास। इसी प्रकार नये परिसर में एक खेल–मैदान है, जो दर्शकों के बैठने की जगह, प्रसाधन कक्ष, भण्डार आदि सुविधाओं से युक्त है। संस्थान के विभिन्न कार्यक्रमों को चलाने के लिए 570 लोगों के बैठने की क्षमता वाला एक सभाभवन है। इस के अतिरिक्त दार्शनिक वादविवाद भवन, विद्यार्थियों के मनोरंजन केन्द्र अपनी गतिविधियों को करने के लिए सुलभ है। भिक्षुणी छात्राओं के लिए एक और छात्रावास तथा प्रोफेसरों के लिए चार आवासों का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

16. पुस्तकालय

केंद्रीय बौद्ध विद्य संस्थान (सम विश्वविद्यालय) का शेरब ग्यास ब्येद छ्ल पुस्तकालय किसी भी उम्र के लोगों के लिए एक आत्मा–पौष्टिक स्थान है और मन की बैठक के लिए एक प्राकृतिक

केंद्र बिंदु है। यह पुस्तकालय संस्थान का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिस पर छात्र एवं अध्यापक ही नहीं अपितु संस्थान के अन्य सदस्य भी सूचना एवं ज्ञान की प्राप्ति हेतु इस पर निर्भर रहते हैं। पुस्तकालय पूरे हिमालय क्षेत्र में सबसे बड़े पुस्तकालयों में से एक है, जो बौद्ध अध्ययन, तिब्बती विज्ञान, लद्दाख अध्ययन और विभिन्न अन्य विषयों में ज्ञान का प्रसार करता है। पुस्तकालय को 'स्लिम थुमी सॉफ़्टवेअॅर' लगाकर 'कॅम्प्यूटराइज' किया गया है। इस पुस्तकालय में तीन विभाग हैं– (1) सामान्य विभाग, (2) भोट अथवा सुंगबुम विभाग और (3) सन्दर्भ विभाग।

इस पुस्तकालय में कुल 36935 ग्रन्थ, भोटी, अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, पालि तथा उर्दू भाषाओं में धार्मिक, ऐतिहासिक, दार्शनिक, काव्यएवं सामाजिक विषयों पर उपलब्ध हैं। पुस्तकालय में विश्वकोश, शब्दकोश तथा वार्षिक ग्रन्थों का संग्रह भी है। प्राप्त विवरण के अनुसार इस सत्र के दौरान संस्थान ने ₹3.33 लाख की कुल 1097 पुस्तकें क्रय की गयीं। पुस्तकालय 31 भारतीय एवं विदेशी शोध पत्रिका/समसामयिक पत्रिकाओं का ग्राहक बना। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार की भाषाओं में अन्य 09 प्रकार की पत्रिकायें क्रय की गईं हैं। विद्यार्थियों एवं पाठकों की रूचि को ध्यान में रखते हुए पुस्तकालय 08 प्रकार के समाचारपत्रों का भी क्रय करता है। समाचार पत्र आपूर्तिकर्ताओं ने कोविड–19 महामारी के कारण वर्ष के दौरान समाचार पत्रों की आपूर्ति बंद कर दी। वर्ष 2020–21 के दौरान पुस्तकालय में आए लोगों में 774 छात्र, 77 कर्मचारी और 11 बाहरी लोग शामिल हैं।

17. संग्रहालय

संस्थान ने एक छोटा पुरातात्विक संग्रहालय स्थापित किया है। विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों से प्राप्त पुरातात्विक अवशेषों का संचय कर इस संग्रहालय में स्थापित किया गया है। इस संग्रहालय में लदाख की बौद्ध कलाकृतियों, चित्रों और छायाचित्रों के साथ–साथ विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों के पुरातात्विक अवशेषों के नमूने संरक्षित किये गये हैं। लदाख में यह अपने ढंग का एक अनूठा संग्रहालय है, जो प्रति वर्ष यहाँ बड़ी संख्या में आने वाले देशी एवं विदेशी पर्यटकों और शोधकर्ताओं को आकर्षित करता है।

18. विशेष व्याख्यान/अन्य शैक्षिक क्रियाकलाप

(1) **ग्यल–स्रस बकुला रिनपोछे व्याख्यान माला :** संस्थान प्रत्येक वर्ष ग्यल–स्रस बकुला रिनपोछे व्याख्यानमालाका आयोजन करता है।परन्तु वर्ष के दौरान कोविड–19 महामारी के कारण यह कार्यक्रम आयोजित नहीं किया जा सका।

(2) **वार्षिक पत्रिका :** संस्थान 'रिगपे दुद्चि़' नामक एक वार्षिक पत्रिका तथा 'लोमे गछ़ल' और एक मासिक समाचार–पत्रक भोटी में प्रकाशित करता है जिनमें संस्थान के अध्यापक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी विभिन्न विषयों पर अपना लेख प्रस्तुत करते हैं। विगत वर्ष में संस्थान के अध्यापकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न क्रिया–कलापों में प्राप्त किये गये चित्रों को इन में विशेष

रूप से प्रकाशित किया। इस के अतिरिक्त ग्रीन तारा गर्ल्स हॉस्टल के द्वारा "ग्रोल–ल्जंग गी स्ग्रोन–मई" नामक एक मासिक समाचार पत्र निकाला जाता है। ये सम्पूर्ण रूप से एक सांस्थानिक पत्रिका हैं एवं इनमें पूर्ण रूप से संस्थान के स्वरूप तथा उद्देश्य को ही सम्मिलित किया जाता है।

(3) **दवाईयों की सुविधा :** संस्थान में एक अपना दवाखाना है, जहाँ से विद्यार्थी, अध्यापक एवं कर्मचारियों को दवाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं। इसके लिए एक अस्थायी डॉक्टर की नियुक्ति की गयी है जो एक दिन के अन्तर पर यहाँ आते हैं। एक परिचारिका एवं एक सहपरिचारिका उक्त डॉक्टर की सहायता करती हैं। यह दवाखाना अध्यापक, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त लाभदायक है। कोविड–19 महामारी के कारण वर्ष 2020–21 एक चुनौतीपूर्ण वर्ष रहा है। कर्मचारियों और छात्रों के लिए खरीदी गई दवाएं अधिकतर अप्रयुक्त थीं, परन्तु कई वस्तुओं, जिनमें सैनिटाइज़र, कीटाणुनाशक, विटामिन आदि शामिल हैं, जिनकी कीमत ₹68.517 की खरीद की गई और छात्रों और कर्मचारियों के बीच स्वतंत्र रूप से वितरित की गई। बाकी अनुपयोगी दवाओं को संस्थान के लिए दवाओं की आपूर्ति करने वाले एजेंट के साथ री–साइकिल किया जा रहा है।

19. पाठ्यक्रम

प्रारम्भ में संस्थान में एक दस वर्षीय पाठ्यक्रम प्रचलित था जिसके अन्तर्गत हिन्दी, संस्कृत, बौद्ध दर्शन एवं भोटी भाषा की पढ़ाई होती थी। सन् 1973 में संस्थान, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश से सम्बद्ध हुआ तथा संस्थान के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, सीमान्त प्रदेशीय छात्रों की आवश्यकतानुसार एक विशेष पाठ्यक्रम तैयार किया गया। जनवरी 2016 में के.बौ.वि.सं. लेह को सम विश्वविद्याल का दर्जा प्रदान करने के बाद संस्थान ने पाठ्यक्रम उपयुक्तता में संशोधन करते हुए अधिसत्र–प्रणाली (सेमेस्टर सिस्टम) को आरम्भ किया। इस सम्बन्ध में संस्थान ने सम्बन्धित क्षेत्र में विशेषज्ञों को आमंत्रित कर कार्यशालाओं की एक श्रृंखला आयोजित की और अन्य विश्वविद्यालयों के संबंधित विषयों के विभाग अध्यक्षों द्वारा संशोधन कराकर उक्त पाठ्यक्रम काक्रियान्वयन किया।

तत्पश्चात इसको शिक्षा परिषद के समक्ष विचार और अनुमोदन के लिए रखा गया।संस्थान के पाठ्यक्रम में हिन्दी, अंग्रेजी, भोट साहित्य एवं बौद्ध दर्शन अनिवार्य विषय हैं। राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, पालि, संस्कृत, इतिहास, तुलनात्मक दर्शन, अमची/तिब्बती चिकित्साविद्या, काष्ठकला, शिल्पकला तथा चित्रकला वैकल्पिक विषय के रूप में हैं। सफल उम्मीदवारों को आचार्य, शास्त्री, उत्तर मध्यमा और पूर्वमध्यमा की उपाधि प्रदान किया जाता है।समकक्ष उपाधि निम्नलिखित हैं :

1.	पूर्वमध्यमा	मैट्रिकुलेशन
2.	उत्तरमध्यमा	उच्चतर माध्यमिक

3. शास्त्री (अंग्रेजी के साथ) स्नातक (बी.ए.)
4. आचार्य स्नातकोत्तर (एम.ए.)

संस्थान ने तिब्बत के महायान सम्प्रदाय शास्त्रों को अनिवार्य वैकल्पिक विषय के रूप में कक्षा शास्त्री और आचार्य के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया है। इस कार्य का विभाग के सदस्यों, विद्यार्थियों तथा लदाख के अन्य विद्वानों ने स्वागत किया है।

सर्टिफिकेट कोर्स

(क) छह महीने का ऑनलाइन सर्टिफिकेट कोर्स

1) भोटी भाषा और साहित्य में सर्टिफिकेट कोर्स
2) बौद्ध धर्म में सर्टिफिकेट कोर्स

तीन महीने का सर्टिफिकेट कोर्स 1 जुलाई, 2020 को शुरू किया गया था, जिसमें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय छात्रों ने भाग लिया था। पाठ्यक्रम का कार्यक्रम भोट बौद्ध दर्शन, बौद्ध साहित्य और बौद्ध पुराण इतिहास, के.बौ.वि.सं. के विभागों द्वारा विकसित और आयोजित किए गए थे।

भोटी भाषा और साहित्य में सर्टिफिकेट कोर्स खनपो कोनछोक थुबस्तान, विभागाध्यक्ष, भोटी साहित्य विभाग और थुबस्तान रिगज़िन, शोध कर्ता द्वारा सफलतापूर्वक आयोजित किया गया था। जबकि बौद्ध धर्म में सर्टिफिकेट कोर्स का संचालन इतिहास के प्राध्यापक डॉ.स्तनज़ीन मिग्युर और तुलनात्मक दर्शन की प्राध्यापक सुश्री जिगमेद ल्हामो द्वारा किया गया था। सफल समापन पर छात्र–छात्राओं को प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।

(ख) जापानी लोगों के लिए बौद्ध धर्म के परिचय पर ऑनलाइन सर्टिफिकेट कोर्स।

कहा जाता है कि भारत और जापान के बीच सौहार्दपूर्ण संबंधों की स्थापना छठी शताब्दी में शुरू हुई, जब जापान में बौद्ध धर्म की शुरूआत हुई। बौद्ध धर्म के माध्यम से निस्पंदन की गई भारतीय संस्कृति का जापानी संस्कृति पर बहुत प्रभाव पड़ा है, और यह जापानी लोगों की भारत से निकटता की भावना का स्रोत है। हाल के वर्षों में जापानियों ने जीवित बौद्ध संस्कृति और विरासत के कारण भारत में लद्दाख के साथ एक मजबूत बंधन विकसित किया। इसे ध्यान में रखते हुए केंद्रीय बौद्ध विद्या संस्थान (सम विश्वविद्यालय) लेह ने जापान और लद्दाख को जोड़ने के लिए विभिन्न गतिविधियों में लगे जापान के एक संगठन जुले लद्दाख के सहयोग से "तिब्बती बौद्ध दर्शन का परिचय" पर छह महीने का ऑनलाइन कोर्स शुरू किया है। बौद्ध अध्ययन के लिए हिमालय में सबसे बड़े संस्थानों में से एक होने के कारण, केंद्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह वैश्विक दर्शकों को आकर्षित करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों की सुविधा प्रदान कर रहा है। जापान के लोगों के लिए हाल ही में शुरू किए गए कार्यक्रम में प्राचीन भारतीय ज्ञान की नालंदा परंपरा में निहित बौद्ध अध्ययनों के माध्यम से जापान के साथ संबंधों को आगे

बढ़ाने के लिए बुद्धिजीवियों और संस्थानों को शामिल किया गया है। मुख्य उद्देश्य अकादमिक आदान–प्रदान कार्यक्रम और पाठ्यक्रम शुरू करके बौद्ध अध्ययन के लिए वैश्विक नेटवर्क स्थापित करना है। के.बौ.वि.सं. लेह के बुद्धिजीवी निश्चित रूप से "तिब्बती बौद्ध दर्शन का परिचय" पर ऑनलाइन पाठ्यक्रम के माध्यम से जापानी लोगों को लाभान्वित करेंगे। पाठ्यक्रम का संचालन के.बौ.वि.सं. के निदेशक प्रो. कोनछोक वांगदु द्वारा ऑनलाइन किया गया था और जुले लद्दाख के निदेशक श्री स्करमा ग्युरमेद द्वारा जापानी में अनुवाद किया गया था।

(ग) बौद्ध विज्ञान के परिचय पर दस दिवसीय ऑनलाइन पाठ्यक्रम।

केंद्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, सम विश्वविद्यालय, चोगलमसर, लद्दाख द्वारा 18 से 27 जुलाई, 2020 तक बौद्ध विज्ञान के परिचय पर दस दिवसीय ऑनलाइन पाठ्यक्रम आयोजित किया गया था। इस पाठ्यक्रम को डॉ.ज़िलज़ा वांगमो ने जूम मीटिंग और फेसबुक लाइव के माध्यम से पढ़ाया था। इस पाठ्यक्रम के लिए कुल 194 पंजीकरण हुए थे, जिनमें से लगभग 40 प्रतिभागी जू मीटिंग में नियमित रूप से उपस्थित थे। फेसबुक पर सभी सत्रों के दौरान 1के–7के व्यूज थे। 75 प्रतिक्षत उपस्थिति वाले प्रतिभागियों को भागीदारी के लिए ई–प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।

10 दिवसीय सत्र के दौरान 4–5 बजे से बौद्ध विज्ञान के विभिन्न विषयों पर पढ़ाया और चर्चा की गई जैसे कि बौद्ध धर्म में मन की अवधारणा और इसके विभाजन, मन और मानसिक कारक, दो सत्य, चार आर्य सत्य, आचार्य धर्मकीर्ति द्वारा रचित प्रमाणावर्तिका (प्रमाण पर भाष्य; ति. छ़द–म र्नम–ग्रेल) के द्वितीय अध्याय पर संक्षेप में छूते हुए मन–मस्तिष्क का विरोधाभास, भावना अवस्था (ध्यान संतुलन) और एसईई (सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक) के ढांचे पर केंद्रित सार्वभौमिक नैतिकता, के–12 पाठ्यक्रम शिक्षण है। प्रत्येक सत्र का अंतिम 10–15 मिनट का स्लॉट प्रश्नोत्तर के लिए रखा गया था।

प्रतिभागियों में मुख्य रूप से के.बौ.वि.सं. लेह, दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ, रेकजाविक विश्वविद्यालय, टीआईएसएस, मुंबई, उत्तराखंड तकनीकी विश्वविद्यालय और एफयू, बर्लिन के विश्वविद्यालय शोध छात्र थे। दिल्ली विश्वविद्यालय, बौद्ध अध्ययन विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, पाली विभाग मुंबई विश्वविद्यालय और एनएनएस नालंदा विहार के सहायक प्रोफेसर और अतिथि संकाय भी शामिल थे। प्रतिभागियों ने प्रश्नोत्तर सत्रों में सक्रिय भूमिका निभाई और बौद्ध विज्ञान के बारे विषय में अधिक जानने में अपनी गहरी रूचि व्यक्त की।

20. छात्रवृत्ति

संस्थान में अध्ययनरत छात्रों को ₹820.00 से ₹1010.00 के बीच प्रतिछात्र प्रतिमाह की दर से छात्रवृत्ति दी जाती है। इस के अतिरिक्त डुजिंग फोडंग विद्यालय, जंस्कर, बौद्ध दर्शन संस्कृत

विद्यालय,मंडोगुलु और 50 गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति दी जाती है। इस प्रकार से इस सत्र के दौरान ₹182.46 लाख की कुल राशि का वितरण छात्रवृत्ति के रूप में किया गया।

21. विद्यार्थियों को पाठ्य पुस्तक एवं कापियों का निःशुल्क वितरण

संस्थान में तथा इस के फीडर गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी लदाख के सबसे पिछड़े और दूरदराज क्षेत्रों से हैं और वे अनुसूचित जनजाति के हैं। तदनुसार, संस्थान ने ट्रिब्यूनल उप–योजना के अन्तर्गत, संस्थान के सभी विद्यार्थियों के लिए पाठ्य पुस्तक एवं उत्तरपुस्तिकाओं का निःशुल्क वितरण करने की व्यवस्था की है। प्राप्त विवरण के अनुसार इस वर्ष के दौरान संस्थान ने ₹11,95,389 लाख की पाठ्यपुस्तकें एवं उत्तरपुस्तिकायें खरीदीं और केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान तथा इस क्षेत्र के विभिन्न भागों में स्थित शाखा विद्यालयों एवं फीडर गोनपा/श्रामणेरिका विद्यालयों के विद्यार्थियों में निःशुल्क वितरित कीं।

22. परीक्षा परिणाम

संस्थान की कक्षा छठी से आठवीं तक की परीक्षाएँ संस्थान के कनिष्ठ शाखा के प्रधान अध्यापक द्वारा आयोजित की गईं जबकि पूर्वमध्यमा प्रथम से आचार्य द्वितीय तक की परीक्षाएँ एक संकाय सदस्य के अधीन परीक्षा विभाग के प्रभारी द्वारासंचालित की गईं। वर्ष 2020–21 सत्र के अन्तर्गत प्रत्येक कक्षा की परीक्षाओं के परिणाम का विवरण पृष्ठ संख्या 41 पर परिशिष्ट के रूप में दर्शाया गया है।

23. गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय

अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु यह संस्थान विभिन्न गोनपाओं में 50 गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय चला रहा है जो इस प्रदेश में अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। ये विद्यालय सम्बन्धित गोनपाओं के सहयोग से चलाये जा रहे हैं। तदनुसार उक्त गोनपा कक्षाओं एवं छात्रावास की सुविधाओं के साथ–साथ धार्मिक क्रियाकलापों की शिक्षा प्रदान करते हैं। संस्थान की ओर से प्रवेश प्राप्त छात्रों की संख्या के आधार पर विद्यार्थियों के लिए एक से तीन शिक्षकोंकी व्यवस्था की जाती है। इसके अतिरिक्त साज–सामान, लेखन–सामग्री, पाठ्यपुस्तक एवं कापी और प्रत्येक विद्यार्थी के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था की जाती है। संस्थान द्वारा नियुक्त शिक्षक विद्यार्थियों को गोनपा–विषयक शिक्षा के साथ–साथ अन्य आधुनिक विषयों, जैसे – भोटी भाषा, हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, सामाजिक विज्ञान आदि की शिक्षा प्रदान करते हैं। प्राप्त विवरण के अनुसार विगत वर्ष लदाख के विभिन्न गोनपाओं में स्थापित 50 गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों में कुल 751 विद्यार्थी अध्ययनरत थे। वर्ष 2020–21 के

विद्यार्थियों के नामांकन का विवरण विद्यालयवत् एवं कक्षावार पृष्ठ संख्या 42 पर परिशिष्ट के रूप में दर्शाया गया है।

24. वार्षिक समारोह

कोविड–19 महामारी के कारण 23 अक्टूबर को केंद्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान (सम विश्वविद्यालय) के 61वें वार्षिक दिवस एक बहुत ही सरल एवं संक्षेप कार्यक्रम के रूप में आयोजित किया गया था। इस दौरान संस्थान के यूटूप चैनल के माध्यम से धार्मिक प्रमुखों और पूर्व प्राध्यापकों और शिक्षकों से वीडियो संदेश जारी किया गया।

25. अन्य महत्वपूर्ण घटनायें

प्राप्त विवरण के अनुसार विगत वर्ष संस्थान में निम्नलिखित उत्सव एवं क्रियाकलापों का बड़े उत्साह के साथ आयोजन किया गया:

(क) **डॉ. राधाकृष्णन की जयन्ती, शिक्षक दिवस :** संस्थान ने दिनांक 5 सितम्बर 2020 को भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन की जयन्ती शिक्षक दिवस के रूप में मनाई। विगत वर्षों की तरह इस वर्ष कोविड–19 के प्रकोप के कारण संस्थान में शिक्षक दिवस मनाना संभव नहीं हो पाया। हालाँकि, छात्रों के जीवन में शिक्षकों की भूमिका एक मित्र, संरक्षक और कोच के रूप में सर्वोपरि मानते हुए, संस्थान ने 5 सितंबर, 2020 को सोशल मीडिया पर निम्नलिखित हैशटैग (#) अभियान के माध्यम से शिक्षक दिवस मनाया :

#हमारेशिक्षकहमारेनायक
#शिक्षकभारतसे

इस अभियान में छात्रों, शोधार्थियों और संस्थान के गैर–शिक्षण कर्मचारियों ने शिक्षकों और सेवानिवृत्त शिक्षकों को सम्मानित करने के लिए भाग लिया, जिन्होंने छात्रों और संस्थान के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। संस्थान के छात्रों और गैर–शिक्षण कर्मचारियों ने सोशल मीडिया के माध्यम से सम्मानि शिक्षकों का आभार व्यक्त किया।

(ख) **हिन्दी दिवस :** संस्थान में प्रत्यैक वर्ष दिनांक 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है, जिस में हिन्दी में विभिन्न प्रकार की साहित्यिक प्रतियोगिताओं का संचालन किया जाता है, जैसे निबन्ध लेखन प्रतियोगिता, कविता पाठप्रतियोगिता तथा व्याख्यान प्रतियोगिता आदि। वर्ष 2020 में संस्थान के कार्यालय में हिंदी भाषा में कार्य को बढ़ावा देने के लिए कार्यालय कर्मचारियों के लिए हिंदी दिवस और हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। यू.टी. प्रशासन द्वारा जारी कोविड–19 एसओपी का अनुपालन करते हुए संस्थान के कार्यालय में कार्यरत

अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच हिंदी में निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

(ग) **स्वच्छ भारत अभियान :** भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी की पहल पर भारत सरकार ने सम्पूर्ण देश को साफ सुथरा रखने के विचार से स्वच्छ भारत अभियान का शुभारंभ किया। तदानुसार केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह ने इसको ध्यान में रखते हुए संस्थान के सभी कर्मचारी तथा विद्यार्थियों को सम्मिलित कर संस्थान के कार्यालय, कक्षा, परिसर और आसपास के क्षेत्रों की सफाई निम्न अवसरों पर कराई। हालाँकि, कोविड–19 महामारी के कारण, रिपोर्टाधीन वर्ष में स्वच्छता अभियान नहीं चलाया गया था।

विश्व पर्यावरण दिवस : संस्थान हर साल 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाता है। हालाँकि, कोविड–19 संकट के कारण इसे आयोजित नहीं किया गया।

महात्मा गांधी की जयंती : महात्मा गांधी की जयंती आमतौर पर हर साल 2 अक्टूबर को संस्थान में मनाई जाती है। हालाँकि, कोविड–19 महामारी के कारण वर्ष 2020–21 में इस कार्यक्रम का आयोजन नहीं करने का निर्णय लिया है।

विश्व छात्र दिवस : केंद्रीय बौद्ध विद्या संस्थान हर साल 15 अक्टूबर को पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम के जन्मदिन के उपलक्ष्य में विश्व छात्र दिवस मनाता है। हालाँकि, कोविड–19 महामारी के कारण वर्ष 2020–21 में इस कार्यक्रम का आयोजन नहीं करने का निर्णय लिया है।

स्वतंत्रता विदस : संस्थान के निदेशक प्रो. कोनचोक वांगदु ने आज स्वतंत्रता दिवस, 2020 पर मुख्य परिसर में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। ब्रिटिश शासन से 73 साल के आजादी को कोरोना वायरस संकट के कारण सीमित शैक्षणिक और गैर–शैक्षणिक कर्मचारियों की उपस्थिति में परिसर में मनाया जा रहा है। इस अवसर पर निदेशक ने हाल ही में भारत–चीन सीमा पर अपनी जान गंवाने वाले जवानों और कोविड–19 के खिलाफ लड़ाई में देश के अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्ताओं के धैर्य और प्रतिस्कन्दन की सराहना की। उन्होंने कोविड–19 के प्रकोप के दौरान शिक्षा के क्षेत्र में कें.बौ.वि.सं. द्वारा की गई गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला। अंत में निदेशक ने सभी देशवासियों को 74 वें स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस : संस्थान हर साल अलग–अलग विषयों के साथ अंतर्राष्ट्रीय महिमला दिवस का आयोजन करता है। लेकिन कोडि–19 महामारी के कारण इस कार्यक्रम का आयोजन नहीं करने का निर्णय लिया है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस : केंद्रीय बौद्ध विद्या संस्थान (सम विश्वविद्यालय) ने 21 जून, 2020 को कें.बौ.वि.सं. के आधिकारिक यूट्यूब प्रीमियर के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस ऑनलाइन मनाया। मौजूदा कोविड–19 महामारी की स्थिति को देखते हुए न्यूनतम प्रतिभागियों

के साथ सोवा रिगपा विभाग के अध्यक्ष, डॉ. ठीनले यांगजोर के नेतृत्व में एसओपी का पालन करते हुए योग दिवस मनाया गया।

योग सत्र में कें.बौ.वि.सं. लेह के पूर्व छात्रों और योग प्रशिक्षकों, स्तनज़ीन छोसरब, छ़ेरिङ यांगचन और जिगमेद रिनचेन ने भाग लिया। उन्होंने कई बुनियादी योग आसन (शरीर के आसन) का प्रदर्शन किया है। संस्थान के एक शोध सहायक डोलमा छ़ेरिङ की एक व्यापक कमेंट्री ने पूरे योग सत्र को पूरक बनाया।

योग सत्र के बाद डॉ. ठीनलेस यांगजोर द्वारा "योग और सोवा रिगपा" पर एक वार्ता हुई। उन्होंने कहा, "योग एक प्राचीन अभ्यास है, जो मन और शरीर को एक साथ लाता है, शरीर के ऊर्जा स्थानों को शुद्ध करता है, अंगों के कार्यों को मजबूत करता है, आत्मा को साफ करता है और मन की मानसिक स्थिति को शांत करता है"। उन्होंने पांच तत्वों (अंतरिक्ष, हवा, अग्र, जल, पृथ्वी) के संबंध पर जोर दिया, जो बदले में पारंपरिक तिब्बती चिकित्सा "र्लुङ", "खीगपा", "पदकन" के तीन मूल तत्वों से जुड़ा है, जो की महारत का उपयोग करता है। सांस के साथ–साथ आंतरिक सूक्ष्म ऊर्जा (नहर और चक्र)।

अंत में आयोजन समिति की ओर से जनसंपर्क अधिकारी/मीडिया प्रभारी डॉ. सोनम वांगचोक ने कें.बौ.वि.सं. के निदेशक प्रो.कोंचोक वांगदु और अन्य सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया जिन्होंने कार्यक्रम को सफल बनाने में आयोजन समिति की मदद की। विशेष रूप से लॉकडाउन और कोविड–19 प्रतिबंधों के इन दिनों के दौरान योग के महत्व के बारे में बात करते हुए, डॉ. सोनम ने कहा कि तनाव के स्तर को कम करने और स्वस्थ और स्वस्थ जीवन को बढ़ाने के लिए योग एक महान साधन है।

26. शीतकालीन शिविर

विद्यार्थियों के कल्याण समिति की पहल पर संस्थान हर वर्ष एक महीने का शीतकालीन शिविर आयोजित किया, जिसमें विद्यार्थियों के शैक्षणिक मानक में सुधार, भाषा कौशल और क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन के लिए जागरूकता के साथ–साथ आत्मविश्वास को बढ़ाना है। इस दौरान दार्शनिक विचार–विमर्श, प्रार्थना, ध्यान, नृत्य, गीत, खेल, भाषण देना, शिक्षाविद, नेताओं और अन्य विशेषज्ञों के साथ अन्योन्यक्रिया जैसे कई गतिविधियां को किया जाता है। हालाँकि, कोविड–19 महामारी के कारण 2020–21 के दौरान शीतकालीन शिविर आयोजित करना संभव नहीं था।

27. हिमालयी बौद्ध–संस्कृति–विश्व–कोष के संकलन का प्रारंभ

संस्थान की प्रबन्ध–समिति ने हिमालयी बौद्ध–संस्कृति–विश्व कोष की रचना की परियोजना का अनुमोदन किया है। परियोजना का कार्य पाँच वर्ष का है एवं 10 भागों में विश्व कोष तैयार करने

की योजना है। विद्वानों को अनुबन्ध के आधार पर नियुक्त कर इस परियोजना का कार्यारम्भ हो चुका है। उक्त योजना मुख्य सम्पादक के निरीक्षण में दो सम्पादक एवं तीन शोध–सहायकों के सहयोग से प्रगति पर है। प्राप्त विवरण के अनुसार संस्थान ने इस विश्वकोश के दो खण्ड़ोंको प्रकाशित किया है, जो लदाख क्षेत्र से सम्बन्धित हैं। हिमाचल प्रदेश के क्षेत्र को कवर वाले अन्य दो खंड पूरे हो चुके हैं और प्रकाशन के अधीन हैं। हिमालयी बौद्ध संस्कृति के दार्शनिक और सैद्धांतिक आधार के प्रथम खंड पर कार्य प्रगति पर है। पहले खंड में 22 अध्याय है, जिनमें से 15 अध्याय पूरे हो चुके हैं और सात अध्याय प्रगति पर हैं।

28. पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, भारत सरकार ने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह को पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र के रूप में लदाख क्षेत्र के लिए "पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र" पद प्रदान किया है। तदनुसार संस्थान ने अनुबन्ध के आधार पर विद्वानों की नियुक्ति कर उन्हें काम सौंपा है। संस्थान ने लदाख क्षेत्र के 2389 मठों, महलों एवं व्यक्तियों से लगभग 37722 पाण्डुलिपियों का संग्रह किया है तथा प्रयास है कि इस क्षेत्र में उपलब्ध सभी पाण्डुलिपियों का संग्रह किया जा सके। इसके अतिरिक्त संस्थान लदाख क्षेत्र के विभिन्न विहारों में उपलब्ध दुर्लभ पाण्डुलिपियों का संरक्षण भी करता है।

संस्थान ने पांडुलिपियों के संरक्षण के लिए एक प्रयोगशाला भी स्थापित की है। अब तक संस्थान ने दुर्लभ पांडुलिपियों के 47,040 फोलियो को संरक्षित किया है, जो विभिन्न मठों जैसे कि मठो मठ, हेमिस मठ और अन्य व्यक्तिगत घरों में बिगड़ने की अवस्था में हैं।

29. डिग्री/डिप्लोमा प्राप्त छात्रों का नियोजन

संस्थान पी–एच. डी. (विद्यावारिधि) उपाधि, भोट बौद्धदर्शन, संस्कृत बौद्ध दर्शन, बौद्ध पुराणेतिहास इतिहास, भोट साहित्य तथा तुलनात्मक दर्शन विषयों में आचार्य (एम.ए. से समतुल्य), शास्त्री (बी.ए.से समतुल्य), उत्तर मध्यमा (+2 से समतुल्य) और पूर्वमध्यमा (मैट्रिक से समतुल्य) की उपाधि प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त भोट चिकित्सा, थंका/चित्रकला,मूर्ति–कला औरकाष्ठकला में भी छः वर्ष की उपाधि दी जाती है। यह अवलोकन किया गया है कि जिन विद्यार्थियों ने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह से ऊपर बताये गये पाठ्यक्रमों में उपाधि प्राप्त की है, वे बेरोजगार नहीं है। जिन विद्यार्थियों ने इस संस्थान से उपाधि प्राप्त की है वे विशेषकर शिक्षा विभाग, जम्मूकश्मीर, केन्द्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय, और निजी स्कूलों में आसानी से नियुक्त हो जाते हैं। जिन उम्मीदवारों के पास ऊपर की उपाधियाँ हों उन्हें आकाशवाणी और दूरदर्शन विभागों में नियुक्त होने का अच्छा अवसर है क्योंकि इन विभागों में उन उम्मीदवारों को वरीयता दी जाती है, जिनको स्थानीय भाषा का अच्छा ज्ञान हो।

संस्थान को गर्व महसूस होता है कि संस्थान के पूर्व छात्र राज्य और केंद्र सरकार की सेवाओं में अच्छे स्थानों पर हैं, जिनकी भर्ती कश्मीर पी.एस.सी. और यू.पी.एस.सी के माध्यम से की जाती है। इस के अतिरिक्त संस्थान के पूर्व छात्र पूरे भारत में सेना और अर्ध सैनिक बलों में देश के लिए सेवा कर रहे हैं। संस्थान के कुछ पूर्व छात्र विश्व भारती विश्वविद्यालय, शान्ति निकेतन कलकत्ता, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली आदि प्रख्यात विश्वविद्यालयों में काम कर रहे हैं। जम्मू और कश्मीर के पुलिस विभाग में अनेक ऐसे अधिकारी हैं जिन्होंने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह से उपाधि प्राप्त की है। के.बौ.वि.सं., लेह की शाखा और फीडर स्कूल केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के पूर्व छात्रों को नियुक्त कर चलाये जारहे हैं, जो इस क्षेत्र की संस्कृति और विरासत के संरक्षण तथा पदोन्नति के लिए उपयोगी है।

भोट चिकित्सा में उपाधि प्राप्त विद्यार्थी केन्द्र प्रायोजित योजना 'राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन' के अधीन राज्य के स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत हैं, जो पूरे क्षेत्र में ग्रामीण मरीजों को देखते हैं। थंका / चित्रकला, मूर्ति–कला औरकाष्ठकला में उपाधि प्राप्त विद्यार्थी स्थानीय लोग तथा लदाख में आये पर्यटकों से थंका, मूर्ति और लकड़ी पर नक्काशी का काम करके अच्छी खासी धनराशि कमा रहे हैं। इसके अतिरिक्त जिन उम्मीदवारों ने ऊपर बतायी गई उपाधियाँ प्राप्त की हों, वे उन संस्थाओं में प्रशिक्षक के रूप में नियुक्त होते हैं, जहाँ पर समान पाठ्यक्रम हों।

इस प्रकार हजारों विद्यार्थियों ने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह से उपाधियाँ प्राप्त की हैं और उनमें से कोई भी बेरोजगार नहीं है। यह केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की एक महान् उपलब्धि है।

30. पाठयपुस्तकों का परिशोधन एवं संपादन

वर्ष 2020–21 के दौरान संस्थान ने कक्षा शास्त्री–1 (द्वितीय सेमेस्टर) और शास्त्री–2 (प्रथम सेमेस्टर) के लिए भोट बौद्ध दर्शन, बौद्ध पुराणिक इतिहास और भोट साहित्य की पाठ्य पुस्तकों को संशोधित और संपादित किया गया।

31. डुजिंग फोटंग विद्यालय, जंस्कार

(क) संक्षिप्त इतिहास : जंस्कार बौद्ध संघ के निमन्त्रण पर सन् 1980 में पहली बार परम पावन दलाई लामा जी जंस्कार पधारे थे। उन्होंने इस क्षेत्र की संस्कृति के संरक्षण की आवश्यकता का अनुभव करते हुए एक विद्यालय की स्थापना के लिए जंस्कार बौद्ध संघ को कुछ धनराशि भेंट की। जंस्कार बौद्ध संघ ने इस क्षेत्र के निर्धन एवं जरूरतमंद छात्रों के कल्याण के लिए सितम्बर वर्ष 1984 में डुजिंग फोटंग में एक विद्यालय की स्थापना की। यहाँ प्रारंभ में कुल 101 छात्रों को प्रवेश दिया गया तथा तीन अध्यापकों को नियुक्त किया गया। दूर–दराज के क्षेत्रों

के छात्रों के लिए एक छात्रावास का प्रबंध भी किया गया। जंस्कार के बौद्ध निवासियों ने भी इस विद्यालय के कोष के लिए धन जुटाया। परम पूज्य दलाई लामा जी के वर्ष 1988 में दूसरी बार जंस्कार पधारने पर विद्यालय के विकास के लिए पुनः धनराशि भेंट की। जंस्कार बौद्ध संघ और क्षेत्र की जनता ने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी को इस विद्यालय के महत्व के बारे में अवगत कराया तथा उनसे निवेदन किया कि केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की तरह इस विद्यालय का प्रबंधन भारत सरकार अपने अधीन कर ले। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी ने मार्च/अप्रैल 1988 में अपनी जंस्कार यात्रा के दौरान वहाँ के नागरिकों की भावनाओं का समादर करते हुए "डुजिंग फोटंग विद्यालय" को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह से सम्बद्ध करने की घोषणा की थी। तदनुसार भारत सरकार ने नवम्बर, 1989 से इस विद्यालय को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की शाखा के रूप में मान्यता प्रदान कर दी। तब से यह विद्यालय केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के वित्तीय एवं प्रशासनिक नियन्त्रण में चलाया जा रहा है। वर्तमान में इस विद्यालय में प्रथम कक्षा से दसवीं कक्षा तक कुल 296 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। डुजिंग फोटंग विद्यालय के परिसर में शैक्षिक विभाग, एक छोटा सा पुस्तकालय,एक छोटा बहुउपयोगी सभा भवन, 100 छात्रों के रहने के लिए छात्रावास, कर्मचारी आवास और एक खेल का मैदान है। जो विद्यार्थी छात्रावास में नहीं रहते हैं, उनको लाने–ले जाने के लिए एक स्कूल बस भी है। जंस्कार घाटी एक अलग क्षेत्र है और सर्दियों में लगभग 6 से 7 महीने के लिए लेह और कारगिल से कटा रहता है।

(ख) **परीक्षा का परिणाम (डी.पी.एस.,जंस्कार) :** डुजिंग फोटंग विद्यालय, जंस्कार के कक्षा पहली से आठवीं तक के विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षायें प्रधानाध्यापक के निरीक्षण में संस्थान द्वारा अयोजित की गईं। कक्षा नवीं तथा दसवीं के विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षायें के.बौ.वि. सं.; लेह द्वारा संचालित की गईं। वहाँ के विद्यार्थियों को परीक्षा के लिए लेह आना पड़ता था और अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। अतः इन बातों को ध्यान में रखकर वहाँ एक परीक्षा केन्द्र स्थापित किया गया। वर्ष 2020–2021 सत्र के अर्न्तगत विद्यार्थियों के नामांकन और प्रत्येक कक्षा की परीक्षाओं के परिणाम का विवरण पृष्ठ संख्या 45 पर परिशिष्ट के रूप में दर्शाया गया है।

(ग) **अन्य क्रिया–कलाप (डी.पी.एस.,जंस्कार) :** यह स्कूल विविध शैक्षिक क्रिया–कलापों का आयोजन कर रहा है, जैसे – वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता, साहित्यिक प्रतियोगिता, ऐतिहासिक स्थलों/विहारों का दर्शन, राष्ट्रीय स्तर के महापुरुषों का जन्म दिवस मनाना, मासिक व्याख्यान प्रतियोगिता आदि। इसके अतिरिक्त इस स्कूल में एक छोटा सा ग्रन्थालय है जहाँ विद्यार्थियों के लिए ग्रन्थों का एक अच्छा संग्रह उपलब्ध है।

(घ) **कर्मचारी संख्या :** प्राप्त विवरण अनुसार डुजिंग फोटंग विद्यालय के कर्मचारियों की संख्या पृष्ठ संख्या 46 पर परिशिष्ट के रूप में दर्शाया गया है।

32. बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग, जिला लाहुल व स्पीति (हि.प्र.)

(क) संक्षिप्त इतिहास

हिमालय क्षेत्र क्रमशः लाहुल, स्पीति, किन्नौर, पंगी, कुल्लू और मनाली की बहुमूल्य बौद्ध कला, भाषा और संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलंग, लाहुल–स्पीती (हि.प्र.) की स्थापना सन् 1976 में हुई। सन् 1959 से पूर्व इस क्षेत्र के विद्वान, श्रामणेर एवं भिक्षु उच्च बौद्ध शिक्षा के लिए तिब्बत जाते थे। परन्तु 1959 की ऐतिहासिक घटना के परिणामस्वरूप अचानक इस परम्परा में व्यवधान पैदा हुआ। अतः नवशिष्यों को पारम्परिक बौद्ध शिक्षा देने के लिए बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग अस्तित्व में आया। आरम्भ में यह विद्यालय यहाँ के निवासियों से धन जुटाकर चलाया जाता था। तत्पश्चात् भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय ने बौद्ध / तिब्बती संस्था विकास के वित्त सहयोग योजना के अर्न्तगत कुछ वित्तीय सहयोग दिया। इस क्षेत्र के लोगों ने इस विद्यालय को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह और केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी की प्रणाली के अनुसार भारत सरकार की एक स्वायत्त संस्था के रूप में प्रभार लेने के अथक प्रयास किये। परन्तु यह भारत सरकार के संस्कृति मन्त्रालय की एक स्वायत्त संस्था के रूप में प्रभार नहीं ले सका।

तथापि वर्तमान में, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार ने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की प्रबन्धकारिणी की संस्तुति के आधार पर इस विद्यालय को डुज़िंग फोटंग विद्यालय (डी.पी.एस.) जंस्कार के समान केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के शाखा विद्यालय के रूप में अपने अधीन लेने का निर्णय लिया है। तदनुसार संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार के पत्र सं.एफ. / 1–11 / 2004–बी.टी.आई. दिनांक 05–03–2010 के अनुसार बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग (हि.प्र.) को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह ने अपनी शाखा के रूप में ले लिया है। तब से इस विद्यालय के प्रशासन को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह द्वारा पूर्ण वित्तीय सहयोग से चलाया जा रहा है।

वर्तमान में, इस विद्यालय में, कक्षा प्रथम से दसवीं कक्षा तक 75 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह द्वारा अपने शाखा विद्यालय के रूप में लेने के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि होने की सम्भावना है। इस विद्यालय में एक प्रधानाध्यापक, छः प्रशिक्षित स्नातक, एक भोटी अध्यापक, एक बौद्ध दर्शन का अध्यापक, एक कार्यालय सहायक और तीन चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी कार्यरत है।

कक्षाओं को चलाने के लिए विद्यालय के अपने भवन हैं और दुर्गम क्षेत्र से आये विद्यार्थियों के लिए एक छात्रावास भी है। डुज़िंग फोटंग विद्यालय, जंस्कार के समान इस विद्यालय के कर्मचारियों का वेतन, छात्रों की छात्रवृत्ति, साज–सामान और दिन–प्रति दिन का व्यय केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान,लेह द्वारा दिया जाता है। बाद में प्रबंधकारिणी ने इस विद्यालय को मण्डोगलु, मन्डी, हि.प्र. में स्थानांतरण किया, जिसके लिए डीगुङ कग्युद संघ ने निःशुल्क शिक्षाभवन तथा छात्रावास प्रदान किया है।

(ख) परीक्षा का परिणाम (बी.डी.एस.वी., केलांग)

इस विद्यालय की छठवीं कक्षा से आठवीं कक्षा तक की वार्षिक परीक्षायें प्रधानाध्यापक के निरीक्षण में संस्थान द्वारा अयोजित की जाती हैं। कक्षा नवीं एवं दसवीं की वार्षिक परीक्षा केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह द्वारा अयोजित की जाती है। वर्ष 2020–2021 सत्र के अर्न्तगत विद्यार्थियों के नामांकन और प्रत्येक कक्षा की परीक्षाओं के परिणाम का विवरण पृष्ठ संख्या 47 पर परिशिष्ट के रूप में दर्शाया गया है।

(ग) कर्मचारी संख्या

बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग जिला लाहुल व स्पीति (हि.प्र.) के कर्मचारी संख्या पृष्ठ संख्या 48 पर परिशिष्ट के रूप में दर्शाया गया है।

के.बौ.वि.सं. लेह की सोसाईटी की संरचना

क्र.सं.	*नाम और पता*	*पद*
1.	श्री राघवेन्द्र सिंह सचिव, संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार	अध्यक्ष
2.	ए.एस. और एफ.ए. संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार	सदस्य (पदेन)
3.	संयुक्त सचिव, बी.टी.आई. संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार	सदस्य (पदेन)
4.	भारत सरकार के उच्च शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय, का एक नामांकित व्यक्ति	सदस्य (पदेन)
5.	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सचिव या नामांकित व्यक्ति	सदस्य (पदेन)
6.	उपायुक्त, लेह	सदस्य (पदेन)
7.	लद्दाख गोनपा संघ, के द्वारा चुना गया लद्दाख के गोलपाओं का एक प्रतिनिधि (भिक्षु शडुब चमबा, अध्यक्ष)	सदस्य (गैर–सरकारी)
8.	श्री थुबस्तन छ़ेवांग, अध्यक्ष लद्दाख बौद्ध संघ, लेह लद्दाख के प्रतिनिधि	सदस्य (गैर–सरकारी)
9–10.	केन्द्रीय सरकार द्वारा नामांकित दो प्रख्यात बौद्ध शिक्षाविद 1) डॉ. रवींद्र पंत पूर्व कुलपति, एनएनएम, नालंदा 2) प्रो. हीरापाल गंग नेगी, बौद्ध अध्ययन विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली (गैर–सरकारी)	सदस्य (गैर–सरकारी) सदस्य
11.	कुलपति के.बौ.वि.सं., लेह	सदस्य

क्र.सं.	*नाम और पता*	*पद*
12–13	के.बौ.वि.सं. के बौद्ध संस्थान के संकायों के दो डीन	
	1) गेशे डगपा कलज़ंग भोट बौद्ध दर्शन विभाग के.बौ.वि.सं., लेह	सदस्य (पदेन)
	2) डॉ. ठिनले यंगजोर सोवा रिगपा (भोट चिकित्सा) एवं शिल्पविद्या संकाय के.बौ.वि.सं., लेह	सदस्य (पदेन)
14.	रजिस्ट्रार केंद्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सचिव (पदेन)

के.बौ.वि.सं. लेह की प्रबन्धक समिति की संरचना

क्र.सं.	*नाम और पता*	*पद*
1.	नेदेशक / कुलपति के.बौ.वि.सं., लेह	अध्यक्ष (पदेन)
2–3.	संकायों के दो डीन	
	1) गेशे डगपा कलज़ंग, डीन, के.बौ.वि.सं., लेह	सदस्य (पदेन)
	2) खनपो कोनछोक थुपस्तान, रीडर, के.बौ.वि.सं., लेह	सदस्य (पदेन)
4–6.	चंसलर द्वारा मनोनीत तीन प्रख्यात शिक्षाविद	
	1) श्री अमर साबले, संसद (राज्य सभा)	सदस्य
	2) गेशे नवांग समतेन, कुलपति, सीआईएचटी, सारनाथ	सदस्य
	3) डॉ. टशी पलजोर, भूतपूर्व प्राचार्य, के.बौ.वि.सं., लेह	सदस्य
7.	केंद्र सरकार द्वारा मनोनीत एक प्रख्यात शिक्षाविद सदस्य होंगे (प्रक्रियाधीन)	सदस्य
8–9	दो शिक्षण संकाय (प्रोफेसर / एसोसिएट प्रोफेसर से)	
	1) पदधारी की सेवानिवृत्ति के बात रिक्त	सदस्य
	2) डॉ. ठिनले यंगजोर, रीडर, के.बौ.वि.सं.	सदस्य
10–13.	सोसायटी के चार नामांकित व्यक्ति (पदेन)	
	1) सुश्री अमिता प्रसाद सरभाई संयुक्त सचिव, एमओसी (बीटीआई)	सदस्य (पदेन)
	2) श्रीमती दीपिका पोखरना निदेशक (बीटीआई) एमओसी	सदस्य (पदेन)
	3) श्री थुबस्तन छेवांग अध्यक्ष, लदाख बौद्ध संघ, लेह	सदस्य
	4) भिक्षु शडुब चमबा अध्यक्ष, लदाख गोनपा संघ, लेह	सदस्य
14.	रजिस्ट्रार केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सचिव (पदेन)

शिक्षा समिति की संरचना

क्र.सं.	*नाम और पता*	*पद*
1.	नेदेशक / कुलपति के.बौ.वि.सं., लेह	अध्यक्ष
2.	गेशे डकपा कलज़ङ विभागध्यक्ष, अध्यात्म तथा न्यायविद्या विभाग	सदस्य
3.	खनपो कोनछोग थुबस्तन विभागध्यक्ष, शब्दविद्या विभाग	सदस्य
4.	खनपो शदडुब कोनछोक विभागध्यक्ष, बौद्ध पुराणेतिहास विभाग	सदस्य
5.	डॉ. ठिनले यंगजोर विभागध्यक्ष, सोवा रिगपा एवं ज्योतिष विभाग	सदस्य
6.	डॉ. डी.के. पटनायक विभागध्यक्ष, आधुनिक भाषा विभाग	सदस्य
7.	खनपो कोनचोक थुबस्तन विभागाध्यक्ष, शास्त्रीय भाषा विभाग (देखभाल कर रहा है)	सदस्य
8.	डॉ. एस.के. गौतम विभागाध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान विभाग	सदस्य
9.	श्री छ़ेरिंग दोरज विभागाध्यक्ष, हिमालयी कला और शिल्प विभाग	सदस्य
10.	खनपो जमयांग कुनजांग विभागाध्यक्ष, संप्रदाय शास्त्र	सदस्य
11.	डॉ. विपिन कुमार पांडे विभागाध्यक्ष, तुलनात्मक दर्शन विभाग	सदस्य
12.	रजिस्ट्रार	सचिव

वित्त समिति की संरचना

क्र.सं.	*नाम और पता*	*पद*
1.	निदेशक / कुलपति	अध्यक्ष
2.	संस्थान की सोसायटी द्वारा नामित किए जाने वाले व्यक्ति श्री हरीश कुमार, निदेशक (वित्त) एम.ओ.सी.	सदस्य
3.	प्रबंधन समिति के दो नामिती सदस्य एक बोर्ड का सदस्य होगा 1. डॉ. टशी पलजोर, भूतपूर्व प्राचार्य, के.बौ.वि.सं. लेह 2. श्री जिगमेद नमग्याल, मुख्य वित नियंत्रक एल.ए.एच.डी.सी., लेह	 सदस्य सदस्य
4.	केंद्र सरकार का एक प्रतिनिधि श्री मनीष रंजन अवर सचिव (बी.टी.आई. अनुभाग), एम.ओ.सी.	सदस्य
5.	संस्थान के वित अधिकारी (वर्तमान में रिक्त)	सचिव

प्रकाशन समिति की संरचना

क्र.सं.	*नाम और पता*	*पद*
1.	निदेशक / कुलपति	अध्यक्ष
2.	डॉ. पेमा तेनज़िन प्रकाशन अधिकारी, सी.आई.एच.टी.एस., सारनाथ, वाराणसी (यू.पी.)	सदस्य
3.	प्रो. जमयांग ग्यालछ़न मुख्य संपादक, विश्वकोश हिमालयी बौद्ध संस्कृति, कें.बौ.वि.सं. लेह	सदस्य
4.	श्री छुलठीम ग्याछ़ो (सेवानिवृत्त) टशी थोंगमोन, चोगलमसर, लेह	सदस्य
5.	प्रशासनिक अधिकारी कें.बौ.वि.सं. लेह	सदस्य
6.	डॉ. कोनचोक रिगज़िन अनुसंधान अधिकारी, के.बौ.वि.सं., लेह	सदस्य सचिव

पुस्तकालय समिति की संरचना

क्र.सं.	*नाम और पता*	*पद*
1.	निदेशक / कुलपति	अध्यक्ष
2.	पुस्तकालयाध्यक्ष जिला पुस्तकालय, लेह	सदस्य
3.	डॉ. टशी समफेल निदेशक स्नोङचन पुस्तकालय पी.ओ. कुलान, देहरादून	सदस्य
4.	भिक्षु लगदोर, निदेशक तिब्बती पुस्तकालय एवं अभिलेख धर्मशाला (हि.प्र.)	सदस्य
5.	पुस्तकालय एवं सूचनाधिकारी केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सदस्य–सचिव

शोध समिति की संरचना

क्र.सं.	*नाम और पता*	*पद*
1.	निदेशक / कुलपति	अध्यक्ष
2.	प्रो. राम नंदन सिंह बौद्ध अध्ययन विभाग जम्मू विश्वविद्यालय	सदस्य
3.	डॉ. ग्युरमेद दोरजे निदेशक सी.आई.एच.सी.एस. दाहुंग, अरुणाचल प्रदेश	सदस्य
4.	प्रो. लोबज़ांग छ़ेवांग (सेवानिवृत्त) शे गांव, लेह, लद्दाख	सदस्य
5.	डॉ. कोनचोक रिगज़िन अनुसंधान अधिकारी के.बौ.वि.सं., लेह	सदस्य सचिव

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के कर्मचारियों की कोटि–वार संख्या

क्र.सं.	*पद का नाम*	*वेतन स्तर*	*स्वीकृत पद*
क)	**शैक्षणिक पद**		
1.	निदेशक	14	01
2.	प्रोफेसर/आचार्य	13ए	04
3.	उपाचार्य	12	09
4.	प्राध्यापक	10	23
5.	प्रशिक्षक, शिल्पकला	10	01
6.	प्रशिक्षित स्नातक	07	12
7.	प्रशिक्षक, काष्ठकला	05	01
8.	अध्यापक, गो.वि.	05	100
ख.	**प्रशासनिक पद**		
1.	प्रशासनिक अधिकारी	11	1
2.	अति.प्र. अधिकारी	11	1
3.	अधीक्षक	06	1
4.	लेखाकार	06	1
5.	मेडिकल सुपरवाईज़र	06	1
6.	निजी सहायक	06	1
7.	मुख्य सहायक	06	1
8.	आशुलिपिक	05	1
9.	कार्यालय सहायक	04	4
10.	रोकड़िया	04	1
11.	भण्डारक	04	1
12.	एल.डी.सी.	02	1

क्र.सं.	पद का नाम	वेतन स्तर	स्वीकृत पद
13.	पम्प चालक	04	1
14	गाड़ी चालक	04	2
15.	केयर टेकर	04	1
16	गार्ड कमांडर	02	1
17.	वरिष्ठ चौकीदार	01	1
18.	चौकीदार	01	4
19.	जमादार	01	1
20.	चपरासी	01	6
21.	छात्रावास रसोईया	01	4
22.	छात्रावास बैरा	01	1
23.	कैन्टीन बैरा	01	1
24.	माली	01	1
25.	सफाई कर्मचारी	01	3
ग. पुस्तकालय कर्मचारी			
26.	पुस्तकालय एवं सूचनाधिकारी	10	1
27.	सहायक सम्पादक/सह सूचीकार	06	1
28.	पुस्तकालय सूचना सहायक	06	1
घ. शोध एकांश			
29.	शोधाधिकारी	10	1
30.	अनुवादक	07	1

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के 2020–2021 सत्र के अन्तर्गत प्रत्येक कक्षा की परीक्षाओं के परिणाम का विवरण

कक्षा	*छात्र संख्या*	*परीक्षा में प्रवेश*	*परीक्षा में उत्तीर्ण*	*उत्तीर्ण प्रतिशत*
क. विश्वविद्यालय कक्षाएँ				
1. पूर्वमध्यमा प्रथम	98	88	66	67
2. पूर्वमध्यमा द्वितीय	76	76	66	86
3. उत्तरमध्यमा प्रथम	57	57	53	92
4. उत्तरमध्यमा द्वितीय	44	44	43	97
5. शास्त्री प्रथम	39	37	37	100
6. शास्त्री द्वितीय	39	38	38	100
7. शास्त्री तृतीय	15	14	14	100
8. आचार्य प्रथम	21	20	20	100
9 आचार्य प्रथम (निजी)	15	15	15	100
10. आचार्य द्वितीय	21	21	21	100
11. आचार्य द्वितीय (निजी)	07	07	07	100
कुल	**432**	**427**	**380**	
ख. पारम्परिक हिमालयन कला				
1. काष्ठकला	02	02	02	100
2. मूर्तिकला	11	09	09	100
3. चित्रकला	16	16	16	100
4. ज्योतिष	00	00	00	00
5. अमची-I	06	06	03	50
6. अमची-II	18	17	02	11
7. अमची-III	08	08	04	50
8. अमची-IV	02	02	02	100
9. अमची-V	02	02	02	100
कुल	**65**	**62**	**40**	
पूर्णयोग (क + ख)	**632**	**624**	**554**	

गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों के 2020–2021 सत्र के अन्तर्गत विद्यार्थियों के विद्यालयवार एवं कक्षावार नामांकन का विवरण

क्र.सं.	गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय का नाम	कक्षावार कुल नामांकन									कुल शैक्षणिक पद
		प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	छठी	सतवीं	आठवी	योग	
1.	हेमीस गोनपा विद्यालय, हेमीस, लेह	01	05	06	08	08	16	21	35	100	5
2.	शचुकुल गोनपा विद्यालय शचुकुल, चंगथंग, लेह	07	01	02	06	04	06	10	—	36	3
3.	चेमडे गोनपा विद्यालय चेमडे, लेह	01	05	03	02	01	—	—	—	12	2
4.	अनले गोनपा विद्यालय अनले, लेह	03	01	07	01	03	—	—	—	15	2
5.	कर्मा डूपग्युद छोसलिंग गोनपा विद्यालय, चोगलमसर	02	—	04	10	04	—	—	—	20	2
6.	लीकीर गोनपा विद्यालय लीकीर, लेह	03	03	01	05	05	—	—	—	17	3
7.	ठीकसे गोनपा विद्यालय ठीकसे, लेह	—	—	01	01	04	—	—	—	06	1
8.	सामस्तानलींग गोनपा विद्यालय, नूबरा, लेह	01	03	03	03	06	—	—	—	16	2
9.	स्पीतुग गोनपा विद्यालय, लेह	06	08	07	05	03	—	—	—	29	2
10.	फ्यांग गोनपा विद्यालय, लेह	—	02	—	05	—	—	—	—	07	2
11.	ग्युदजिन तान्त्रिक गोनपा विद्यालय, फे	—	—	02	—	02	—	—	—	04	1
12.	मठो गोनपा विद्यालय, लेह	—	—	—	—	02	—	—	—	02	1
13.	हनुथंग गोनपा विद्यालय	—	—	—	01	02	—	—	—	03	1
14.	स्तगना गोनपा विद्यालय, लेह	01	02	02	04	02	—	—	—	11	2
15.	स्क्युरबनचन गोनपा विद्यालय, खलचे	—	02	—	06	—	—	—	—	08	1
16.	न्योमा गोनपा विद्यालय, चंगथंग	03	—	01	—	01	—	—	—	05	2

क्र.सं.	गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय का नाम	कक्षावार कुल नामांकन									कुल शैक्षणिक पद
		प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	छठी	सतवीं	आठवी	योग	
17.	छुशुल गोनपा विद्यालय, चंगथंग	–	07	06	05	03	–	–	–	21	2
18.	रिज़ोंग गोनपा विद्यालय, लेह	06	03	01	02	–	–	–	–	12	2
19.	देस्कीद गोनपा विद्यालय देस्कीद, नूबरा, लेह	02	02	–	03	03	–	–	–	10	1
20.	यरमा गोनबो गोनपा विद्यालय, नुबरा	02	04	01	01	01	–	–	–	09	1
21.	बरदन गोनपा विद्यालय बरदन, जंस्कार, कारगील	05	06	–	02	02	–	–	–	15	2
22.	कोरज़ोग गोनपा विद्यालय बरदन, जंस्कार, कारगील	05	–	03	01	02	–	–	–	11	2
23.	कारशा गोनपा विद्यालय कारशा, जंस्कार, कारगील	02	01	01	07	08	–	–	–	19	2
24.	लामायुरू गोनपा विद्यालय लामायुरू, लेह	02	04	01	01	02	–	–	–	10	2
25.	फूगथल गोनपा विद्यालय जंस्कार, कारगील	–	–	01	–	03	05	03	02	14	3
26.	रंगदुम गोनपा विद्यालय, जंस्कार	03	04	01	01	02	–	–	–	11	2
27.	मुने गोनपा विद्यालय, जंस्कार	03	02	04	01	–	–	–	–	10	1
28.	जोंगखुल गोनपा विद्यालय, जंस्कार	–	–	04	–	–	–	–	–	04	1
29.	स्तोंगदे गोनपा विद्यालय, जंस्कार	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
30.	स्तगरिमो गोनपा विद्यालय, जंस्कार	–	04	06	–	01	–	–	–	11	1
31.	पलदार गोनपा विद्यालय, पलदार	20	13	13	13	14	–	–	–	73	3
32.	की गोनपा विद्यालय कजा, स्पीती	–	–	10	07	03	–	–	–	20	2
33.	तनग्युद गोनपा विद्यालय कज़ा, स्पिती	–	02	06	–	03	–	–	–	11	2
34.	नालंदा गोनपा	–	01	–	03	–	–	–	–	04	2
35.	उग्र्यन सङ ङगछोस लिङगोनपा विद्यालय, स्पीती	–	04	05	09	06	–	–	–	24	1
36.	तिमोस्गंग श्रामणेरी विद्यालय	–	01	03	04	02	–	–	–	10	1
37.	स्किदमंगश्रामणेरी विद्यालय स्कितमांग	01	03	01	03	–	–	–	–	09	2

क्र.सं.	गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय का नाम	कक्षावार कुल नामांकन								कुल योग	कुल शैक्षणिक पद
		प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	छठी	सतवीं	आठवी		
	श्रामणेरी/ननरी विद्यालय										
38.	चुलीचन श्रामणेरी विद्यालय चुलीचान, लेह	04	01	01	—	01	—	—	—	07	1
39.	बौद्धखरबु श्रामणेरी विद्यालय बौद्धखरबु, करगील	—	03	02	01	02	—	—	—	08	1
40.	वाखा श्रामणेरी विद्यालय वाखा, कारगील	01	—	01	02	01	—	—	—	05	1
41.	शारगोल श्रामणेरी विद्यालय शारगोल, कारगील	01	01	02	—	—	—	—	—	04	1
42.	ज़ंगला श्रामणेरी विद्यालय ज़ंगला, जंस्कार, कारगील	02	06	04	02	01	—	—	—	10	1
43.	करशा श्रामणेरी विद्यालय जंस्कार कारगील	—	04	05	09	06	—	—	—	24	2
44.	टशी छोसलिंग श्रामणेरी विद्यालय, हि.प्र.	01	07	—	01	03	—	—	—	12	2
45.	सक्या श्रामणेरी विद्यालय चोगलमसर	—	01	02	03	05	—	—	—	11	2
46	यङ्चेन् छोसलिङ् श्रामणेरी विद्यालय, स्पीती, हि.प्र.	—	—	—	01	06	—	—	—	07	2
47.	तुङरि श्रामणेरी विद्यालय, ज़ङ्कर	02	01	04	03	02	—	—	—	12	2
48.	दोर्गे ज़ोङ् श्रामणेरी विद्यालय	05	02	03	03	05	—	—	—	18	1
49.	फगमो लिङ् श्रामणेरी विद्यालय	07	03	04	04	03	—	—	—	21	2
50.	देछेन छोलिङ् श्रामणेरी विद्यालय	—	04	—	05	—	—	—	—	09	2
कुल योग		**102**	**126**	**134**	**154**	**137**	**27**	**34**	**37**	**751**	**84**

वर्ष 2020–2021 के परीक्षा का परिणाम (डी.पी.एस., जंस्कार)

कक्षा	*छात्र संख्या*	*उपस्थित*	*परीक्षा में उत्तीर्ण*	*उत्तीर्ण प्रतिशत*
1. प्रथम ए	36	36	36	100
2. प्रथम बी	33	33	33	100
3. द्वितीय	35	35	35	100
4. तृतीय	34	34	34	100
5. चतुर्थ	35	35	35	100
6. पांचवीं	39	39	39	100
7. छठी	41	41	41	100
8. सातवीं	39	39	39	100
9. आठवीं	26	26	26	100
10. नौवीं	18	18	18	100
11. दसवीं	15	15	15	100
कुल	**351**	**351**	**351**	**100**

डी.पी.एस., जंस्कार की कर्मचारी संख्या

पदनाम	ग्रेड में	स्वीकृत पद
क) शैक्षणिक कर्मचारी		
1. प्रधानाध्यापक	वेतन स्तर–9	1
2. टी.जी.टी	वेतन स्तर–7	7
3. अध्यापक	वेतन स्तर–5	5
4. शारीरिक शिक्षा अध्यापक (अनुबन्ध पर)	44900.00 (नियत)	
5. कंप्यूटर प्रशिक्षक (अनुबन्ध पर)	44900.00 (नियत)	
ख) गैर शैक्षणिक कर्मचारी		
1. कार्यालय सहायक (अनुबन्ध पर)	25000.00 (नियत)	–
2. रसोइया	वेतन स्तर–1	1
3. चपरासी सह चोकीदार	वेतन स्तर–1	1
4. गाड़ी चालक (संविदा)	19900.00 (नियत)	–
5. माली (संविदा)	18000.00 (नियत)	1
6. सफाई कर्मचारी	वेतन स्तर–1	1
7. चौकीदार (संविदा)	18000.00 (नियत)	
8. छात्रावास रसोईया (संविदा)	19000.00 (नियत)	

बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग के वर्ष 2020–2021 की परीक्षा का परिणाम

कक्षा	*छात्र संख्या*	*उपस्थित*	*परीक्षा में उत्तीर्ण*	*उत्तीर्ण प्रतिशत*
प्रथम	09	03	03	100
द्वितीय	02	01	01	100
तृतीय	06	06	06	100
चतुर्थ	14	09	09	100
पांचवीं	09	07	07	100
छठी	04	04	04	100
सातवीं	06	06	06	100
आठवीं	06	06	06	100
नवीं	06	06	06	50
कुल	**62**	**48**	**48**	**100**

बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग की कर्मचारी संख्या

पदनाम	*वेतनमान*	*स्वीकृत पद*
शैक्षिक कर्मचारी		
प्रधानाध्यापक	वेतन स्तर–8	1
टी.जी.टी.	वेतन स्तर–7	8
शारीरिक शिक्षा अध्यापक	वेतन स्तर–7	1
गैर शैक्षिक कर्मचारी		
कार्यालय सहायक	वेतन स्तर–4	1
चपरासी	वेतन स्तर–3	3

Central Institute of Buddhist Studies

(Deemed to be University)
Accredited by NAAC with 'A' Grade

ANNUAL REPORT 2020-2021

Choglamsar, Leh (Union Territory of Ladakh)

CONTENTS

S.No.	Contents	Page No.
1.	Brief History	53
2.	Objectives	54
3.	Society	55
4.	Management	55
5.	Constitution of Sub-Committees	55
6.	Funds	56
7.	Staff Strength	56
8.	Faculties and Departments	56
9.	Admission	59
10.	Seminar/Symposium/Workshop	59
11.	Students Exchange Programme	62
12.	Educational Tour	63
13.	Publication	63
14.	Research	63
15.	Campus	63
16.	Library	64
17.	Museum	64
18.	Special Lecture/Other Academic Activities	64
19.	Syllabi	65
20.	Stipend to Students	67
21.	Free distribution of text books and note books to students	67
22.	Examination Result	67
23.	Gonpa/Nunnery School	68
24.	Annual Function	68
25.	Other Important Events	68
26.	Winter Camp	70
27.	Project for the Compilation of Encyclopaedia of Himalayan Buddhist Culture	70
28.	Manuscripts Resource Centre	70

29. Placement of Students after obtaining their degrees and diplomas 71
30. Revision and Editing of Text Books 72
31. Duzin Photang School 72
32. Bauddha Darshan Sanskrit Vidyalaya, Mandogalu (H.P.) 73
33. Annexure
i) Composition of the Society 75
ii) Composition of Board of Management 76
iii) Composition of Academic Council 77
iv) Composition of Finance Committee 78
v) Composition of Publication Committee 79
vi) Composition of Library Committee 80
vii) Composition of Research Committee 81
viii) Staff Strength of CIBS 82
ix) Examination Result of CIBS 84
x) School-wise and Class-wise enrolment of Gonpa/Nunnery Schools 85
xi) Examination Result of DPS, Zanskar 87
xii) Staff strength of DPS, Zanskar 88
xiii) Examination Result of BDSV, Keylong 89
xiv) The Staff Strength of BDSV, Keylong 90

1. BRIEF HISTORY

Prior to 1959, scholars, novices and monks of Ladakh used to go to Tibet in pursuit of higher monastic Buddhist education and used to study and do research for years in the famous Mahaviharas of Drepung, Sera, Gadan, Tashi Lhunpo, Sakya, Sagnag Chosling, Derge, Dregung etc. This practice abruptly came to an end because of historical reasons. Hence, it was held imperative that a Buddhist Institute should be established for formal Buddhist education in this country. Leh was chosen the centre for the dissemination of the Buddhist Culture and Philosophy in view of its geophysical suitability and traditional matrix.

Accordingly, the Central Institute of Buddhist Studies was established at Leh with the holy rituals performed by Rev Ling Rinpoche, the Senior Tutor to H.H. Dalai Lama XIV. The Institute was initially called the "School of Buddhist Philosophy". In 1962, at the behest of Ven Kushok Bakula, Pandit Jawahar Lal Nehru, the first Prime Minister of India, was convinced of the necessity of such an Institution for the Buddhists living in the Himalayas. Thus the Institution was given full accreditation in the matter of financial support under the administrative charge of the Ministry of Culture, Govt. of India. In its initial stages, the Institute admitted ten scholars: one each from ten important Gonpas (Monasteries) of Ladakh. The appointment of two teachers was made to instruct the students in Tibetan Literature and Buddhist Philosophy. For 3 years, these 10 Gonpas bore the entire expenses of the students and the teachers. From 1959 to 1961, the School was conducted at Leh. From there, it was shifted to Spituk Village about 8 kms away from Leh in 1962. The Institute had its new set up in 1973 at Choglamsar, 8 kms South-East of Leh and was registered in the year 1964 under the J&K Registration Act VI of 1998 (1941 A.D.) as an Educational Institution. Sanskrit, Hindi, English and Pali languages were introduced, besides the teaching of Buddhist Philosophy and Tibetan Literature. In 1973, the Institute was affiliated to Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi, U.P., and the courses suitable for the students of the frontier region were introduced. In 2016 the Government of India Ministry of Human Resource Development (Department of Higher Education) on the recommendation of the University Grants Commission conferred the status of 'Deemed to be University' under section 3 of the UGC Act, 1956 to the Central Institute of Buddhist Studies, Leh (Ladakh), Jammu and Kashmir vide its Notification No. F.9-5/ 2001-U3(A) dated 15-01-2016. The first Principal of the Institute was a renowned Tibetan Buddhist Scholar Ven.Yeshi Thupstan who worked from 1959 to 1967. Ven Lochos Rinpoche was appointed as the second Principal of the Institute. Dr. Tashi Paljor worked as the Principal of the Institute from 1979 to 2005. Consequent upon the retirement of Dr. Nawang Tsering from the post of Principal after rendering 5 years of his service from 2005 to 2010, Dr. Wangchuk Dorjee Negi took over the charge of Principal on 15th June 2010. Subsequently, the Board of Management in its meeting held on 19-12-2011 decided to rechristen the post of principal as Director, Dr. Wangchok Dorjee Negi relinquished the post of Director on 12-12-2014. At present Prof. Konchok Wangdu, is working as Director of the Institute.

2. OBJECTIVES

The main purpose of the Institute is to sharpen the multi-faceted personality of the students through inculcation of the wisdom of Buddhist Philosophy, literature and arts as well as to familiarize the students with the modern subjects. This has been a unique Institution in the country because of its provision to teach all the aspects of Himalayan Buddhist Culture at one place. The Institute undertakes Under Graduate, Post- Graduate and Doctoral Programmes in Buddhist Philosophical and Cultural Studies, and also establishes and maintains, feeder schools. The Objectives for which the Institute is established are:

- To develop, manage, supervise and administer the affairs of the educational institute called the Central Institute of Buddhist Studies, Choglamsar, earlier known as the School of Buddhist Philosophy.
- To provide higher education leading to excellence and innovations in such branches of knowledge as may be deemed fit primarily at post- graduate and research degree levels fully conforming to the concept of University, namely, University Education Report (1948) and the Report of the Committee on Renovation, Rejuvenation of Higher Education in India (2009) and the Report of the Review Committee for Deemed to be Universities (2009).
- To engage in areas of specialization with proven ability to make distinctive contributions to the objectives of the university education system,i.e., academic engagement clearly distinguishable from programmes of an ordinary nature that leads to conventional degree in arts, science, engineering, medicine, dental studies pharmacy, management etc. routinely offered by conventional institutions.
- To provide high quality teaching and research facilities for the advancement of knowledge and its dissemination through various research progammes undertaken by a substantial number of full time faculty/research scholars (Ph.Ds and Post-Doctorals) in diverse disciplines.
- To provide instructions for various courses of study and research in different branches of Buddhist Philosophical and Cultural Studies for the award of the degrees and diplomas.
- To provide facilities for research, publication, restoration and advancement of learning and dissemination of knowledge in such branches of Buddhist Philosophy, as the Institute may think fit.
- To co-operate with educational and other institutions in any part of the world having objectives similar to those of the Institute in such manner as may be conducive to their common objectives.
- To invite scholars of Buddhist Philosophy and Cultural Studies from India and other countries for lectures, and to hold seminars, discussions and discourses in Buddhist Philosophy and Culture.

- To do all such things as may be necessary, incidental or conducive to the attainment of all or any of the objectives of the society.

3. SOCIETY

Consequent upon the conferment of Deemed to be University status to the institute, the Memorandum of Association, Rules and Regulations need to be revised as per UGC, Institutions Deemed to be Universities (Amendments) Regulations-2014 and amended in 2016 and accordingly, the Institute has revised the Memorandum of Association and Rules and Regulations. In term of revised Rules, the Institute has to frame a society to guide, supervise and oversee the functioning of the Institute. Accordingly, the Institute has set up the society under the presidentship of the Secretary to Govt. of India, Ministry of Culture to guide, supervise and oversee the functioning of the Institute. The composition of the existing society is placed as Annexure at page 75.

4. MANAGEMENT

The Management of the Institute is vested with the Board of Management under the chairpersonship of the Director, CIBS. The members of the Board are the representatives of different Ministries, Departments, Associations, Universities and Buddhist Scholars nominated by the Govt of India, Ministry of Culture. The tenure of the members of the Board of Management is for a period of three years with effect from the first meeting of the re-constitution of the Board. The Director of the Institute is the Member-Secretary of the Board. The existing composition of the Board of Management is placed as Annexure at page 76.

The meeting of the Board of Management is convened after every six months. The Board of Management has the power to exercise or perform all duties, powers, functions and rights whatsoever necessary or consequential and incidental to give effect to its objectives set forth in the Memorandum of Association.

However, the Govt. of India may from time to time issue directives on breed matter of policy, which the Board shall have to carry out.

5. CONSTITUTION OF SUB-COMMITTEES

Several sub-committees have been constituted under the Board of Management to implement its directives and to assist the Board in the matter of Academic Affairs, Finances, Research, Publication etc. A brief write-up on each sub-committee is as under:

i) *Academic Council:* In term of clause 14 of the Memorandum of Association and Rules and Regulations, the Institute constitutes an Academic Council consisting of eminent scholars and academicians to advise the Board in the Academic Affairs of the Institute. The Academic Council meets at least three times in an academic year as per need to

advise the Board in the respective field. The academic Council meetings were held on 13th March, 2018 and 17th April, 2018. The existing composition of the Academic Council is placed as Annexure at page 77.

ii) ***Finance Committee:*** A Finance Committee under the chairpersonship of Vice Chancellor is constituted as per Memorandum of Association and Rules and Regulations of the Institute. The Committee meets once or twice a year to advise the Director and the Board of Management in matters relating to the administration of property and funds of the Institute. The existing composition of the Finance Committee is placed as Annexure at page 78.

(iii) ***Publication Committee:*** The Institute is carrying out the publication of rare books and manuscripts relevant to Himalayan arts, culture and language. The rare books/ manuscripts proposed to be published are placed before the Publication Committee for review and justification of its publication before being sent to the press. The Publication Committee consists of eminent scholars and experts in the field of publication. The existing composition of the Publication Committee is placed as Annexure at page 79.

(iv) ***Library Committee:*** The Library Committee consists of experts in the field of Library and recommends for upgradation and improvement of the Library from time to time including the requirement of additional staff, machines and equipment, digitization, cataloguing etc. The existing composition of the Library Committee is placed as Annexure on page 80.

(v) ***Research Committee:*** The Research Committee of the Institute conducts interview for selection of candidates for fellowship; reviews the synopsis and progress of the Research Fellows etc. The existing composition of the Research Committee is placed as Annexure on page 81.

6. FUNDS

The Institute is fully financed by the Ministry of Culture, Govt. of India and has been allocated a provision of 2656.40 lakhs for the year 2020–21 to execute various projects approved by the Board of Management, CIBS, Leh.

7. STAFF STRENGTH

The Director being the Head Administrative supervises the Institute assisted by the Administrative Officer and other supporting staff members of the Institute. The staff strength, category-wise of CIBS, Leh, showing teaching and non-teaching staff separately, is placed as Annexure at page 82.

8. FACULTIES AND DEPARTMENTS

The faculties and departments of the Institute have been established on the basis of

Panch Mahavidyas of Monastic tradition for the smooth and effective functioning of the Institute on University pattern as indicated below:

i) Faculty of Adhyatma and Nyaya Vidya (Faculty of Philosophy and Logic)
ii) Faculty of Sabdha Vidya (Faculty of Languages and Literature)
iii) Faculty of Sowa Rigpa and Shilpa Vidya (Faculty of Baudh Medical Science and Arts)
iv) Faculty of Adhunik Vidya (Faculty of Modern Studies)

These faculties are further divided into different departments relevant to their studies as per details given below:

i) Faculty of Adhyatma and Nyayavidya (Faculty of Philosophy and Logic)

The faculty consists of three Departments for Mool Shastra and Sampradaya Shastra with different branches of the disciplines. As per monastic system, Adhyatma and Nyayavidya are two independent vidyas, having different faculties. But we have combined these together to suit the syllabus of the Institute. The departments as discussed are given below:

(i) Department of Bhot Baudh Darshan
(ii) Department of Sanskrit Bauddh Darshan
(iii) Department of Sampradaya Shastra

ii) Faculty of Shabdavidya (Faculty of Literature and Languages)

This faculty consists of the Departments as per details given below:

(i) Department of Bhot Literature
(ii) Department of Classical Languages (Sanskrit and Pali)
(iii) Department of Modern Languages (English and Hindi)

iii) Faculty of Sowa Rigpa and Shilpa Vidya (Faculty of Baudh Medical Science and Arts)

The Institute takes much interest in preservation and promotion of Traditional Himalayan Arts and Culture. Accordingly, the following departments have been set up for preservation and promotion of the arts and culture of the region:

i) **Department of Sowa Rigpa and Bhot Astrology:** It is centuries old tradition in Ladakh to provide herbal medicines to the patients. When there were no allopathic medicines, the Sowa Rigpa System of Medicines used to be very popular in the region. The people still believe that the Sowa Rigpa System of Medicines is the most useful one and has no side effect. Now the Govt. of India has also recognized Sowa Rigpa as one of the traditional and useful medicine systems. So the people opt for Sowa Rigpa System of

Medicines. Keeping the facts in view, the Institute imparts training to students interested in Baudh Medical Science. The +2 (Higher Secondary) passed students having the sound knowledge of Bhoti language are eligible for admission into six years' Baudh Medical Science Course. There are numbers of students who have been awarded the degree and some of them are practicing independently, while most of them are in Govt./private jobs.

ii) **Department of Himalayan Arts and Crafts:**

a) Traditional Scroll/Fresco Painting: This art of painting is very popular in the region. Monasteries of Ladakh are very popular for preserving numerous thankha paintings and frescoes. The frescoes of Alchi Monastery and Lamayuru Monastery are very famous. One can still see the paintings in these monasteries that are one thousand years old. Besides, in each village, there is a monastery having thankhas, frescoes and statues. The tourists from all over the world come to Ladakh in summer season to visit these monasteries. The Institute runs a Buddhist Scroll Painting Course for the students. A number of students receive training in this course to keep alive the centuries old tradition of making the Thangkhas.

b) Traditional Sculpture: The making of clay statues and monastic masks are very common in Ladakh region. There are monastic festivals known as *Gustor/Dosmoche/ Tsetchu/Nagrang* in every monastery held on a special occasion. On this occasion, the mask dance popularly known as *Cham* is performed by wearing masks of different Buddhas and Bhodisattvas, gods, deities etc. The Institute has arranged to train the students for making the art of sculpture of Buddhas, Bhodhisattvas, gods, deities etc., and also teaches the art of making masks. The interested students have to undergo the training for six years after passing Class X. Numbers of students are under training in this art of making statues and masks.

c) Traditional Wood Block Carving: In olden times, when there were no printing machines to print books, here in Ladakh, the people used to get the copy of religious and other texts copied from wooden blocks. The scripts of texts, especially religious texts, are carved on hard wooden blocks in a systematic way, so that the scripts get printed on a paper for reading. Once a text is carved on the wooden blocks, one can copy the text for thousand times like photo copies. This was very popular in Ladakh in olden times. There is a system to hoist prayer flag in the monastery as well as on the top of every Buddhist household known as *Tarchok*, and *Tarchan* on the main gate. These prayer flags are printed texts on clothes of five different colours, which symbolize high spiritual power. The text contained *Lungsta* and *Gyal–Tsan Tsemo*. The text is printed on clothes from wooden block made for the purpose.

To continue this art, the Institute has introduced a six years course of Wood Carving. Besides the block making, one can learn the art of carving other decorative items like the carving of dragons, birds, lions, horses etc. This art is very popular in Ladakh region and one can earn handsome money for one's livelihood through this.

(iv) Faculty of Adhunik Vidya (Faculty of Modern Studies)

There are three departments under this faculty, which are as under:

(i) Department of Baudh Puranic History

(ii) Department of Comparative Philosophy

(iii) Department of Social Sciences

9. ADMISSION

Admission is being provided from Class VI to Class IX on the basis of an entrance test conducted by the Admission Committee as per the norms prescribed. However, the students of the feeder Gonpa/Nunnery Schools of the Institute are admitted directly. Admission is also given to the students to the six-year course in Sowa Rigpa, Traditional Painting, Sculpture, and Wood Carving depending on the availability of seats.

10. SEMINAR/SYMPOSIUM/WORKSHOP

Central Institute of Buddhist Studies, being one of the most important institutions for Buddhist Studies in the country, has been widening its reach nationally and internationally through different programmes in recent years. However, due to the Covid-19 outbreak, many of Institute's programmes stand postponed, including national and international seminars. In this unavoidable situation the institute takes it as an opportunity and started online courses, webinars and lecture series through social media.

During the COVID-19 pandemic almost all higher education institutions (HEIs) around the world have initiated online teachings, online seminars, workshops, webinars involving large number of teachers and pupils. Complying with the correspondence of UGC and Ministry of Culture, Govt. of India, Central Institute of Buddhist Studies (Deemed to be University) Leh has also initiate weekly webinars and lectures online. The webinars are being conducted by the Departments of the Institute, following the guideline designed by the Institute through CIBS facebook page/Google Meet, Zoom etc. The theme and topics are selected by the concerned Departments to meet the aims and objective of the Institute and the subject area of the department to benefit not only the teachers and students but also larger audience in the world.

1. The first national webinar was conducted by the Department of Bhoti Language and Literature on 8th June, 2020 on the topic "Bhoti Language and UT Ladakh". It was hosted by Khenpo Konchok Thupstan, Head of the Department of Bhoti Language and Literature. The first speaker Prof. Konchok Wangdu, Director, CIBS presented his talk on the importance of Bhoti Language for keeping alive rich culture and heritage of the region as well as the ancient Indian wisdom, especially the Nalanda tradition of Buddhist Philosophy. Second speaker Prof. Jamyang Gyaltsen, retired professor,

CIBS talked about the development of Bhoti text books in Ladakh and the need of introducing more books in Bhoti language in Schools to inculcate interest in students for their indigenous language, literature and culture. The enlightening talks were followed by questions and answers. The webinar was conducted through CIBS facebook page.

The webinar was technically supported by Ms. Kunzang Dolma, Software Engineer and Samstam Gurmed, Media Specialist, CIBS.

2. The second webinar was conducted by the Department of Social Science on the 13th June, 2020 on the topic "Revival of Buddhism in India" through Zoom and also shared through CIBS facebook page. The national webinar was convened by Dr Sanjeev Kumar Gautam, Head of the Department of Social of Social Science, supported by Shri Tsering Choldan, Lecturer of Political Science from the same Department. Prof. Konchok Wangdu, Director CIBS delivered the inaugural speech followed by keynote address by Dr Sanjeev Kumar Gautam. Keynote speakers, Prof. Jigar Mohammed, Former Dean of Social Science, University of Jammu and Prof. Shura Darapuri, Former Head of the Department of History, BBAU (Central University) Lacknow, UP presented their presentations on the topic "Revival of Buddhism in India". Both of them have presented impressive and inspiring papers, touching every aspects of the said topic. It was followed by questions and answers. More than 700 participants, including professors, associate professors, assistant professors, research scholars, students and others have registered for the webinar. It was also shared through CIBS official facebook page. At last Shri Stanzin Tsetan presented the outcome of the webinar, followed by vote of thanks by Ms Diskit Chorol, faculty member of the Department of Social Science, CIBS.

   The webinar was technically supported by Ms. Kunzang Dolma, Software Engineer, Jamyang Lundup, Computer Instructor and Samstam Gurmed, Media Specialist, CIBS and Dr Rashmi Gautam.

   The Director, Prof. Konchok Wangdu thanked the HoDs, speakers, supporters and audience for making the webinars success. He wishes the talks and presentations will benefit the individuals as well as the society, not only during this difficult time but also in time to come.

3. The third national webinar was organized by the Dept. of Baudh Puranic History, CIBS on 19th June, 2020 on the topic "History of Ladakh 7–12th Century". The webinar was hosted by Khenpo Shedrup Konchok, Head of the Dept. of Baudh Puranic History. The first speaker Ven. Thupstan Paldan presented his presentation focussing on Lotsava Rinchen Zangpo and his contribution. Second speaker Dr. Stanzin Mingyur, Lecturer, CIBS also presented his presentation on the above mentioned topic. The enlightening and informative presentations were followed by questions and answers. The webinar was conducted through Zoom App and shared through CIBS facebook page to benefit maximum audience.

4. Institute's webinar programme, fourth in series was conducted by the Department of

Bhot Baudh Dharshan on the topic "The Concept of Interdependence and Covid-19" through Zoom and also shared through CIBS facebook page. The national webinar was hosted by Khenpo Konchok Namdak, Lecturer, CIBS. The speakers include Dr. Urgyan Dadul, Reader, CIBS and Geshe Dakpa Kalsang, Head of the Dept. of Bhot Baudh Dharshan. The both speakers have presented impressive and inspiring papers, touching every aspects of the said topic. It was followed by questions and answers.

The theme and topics were selected by the concerned Departments to meet the aims and objective of the Institute and the subject area of the department to benefit not only the teachers and students but also larger audience in the world.

The webinar was technically supported by Ms. Kunzang Dolma, Software Engineer and Samstam Gurmed, Media Specialist, CIBS.

The Director Prof. Konchok Wangdu thanked the HoDs, organizers, speakers and audience for making the webinars a success.

5. Institute's national webinar programme, fifth in series was organized by the Dept. of Sampradaya Shastra on " History of the four major Tibetan Buddhist traditions and how those traditions benefit in holding, maintaining Buddha Dharma" on 11th July, 2020 through Zoom meeting and the institute's facebook page. Geshe Lobsang Tsultrim, Lecturer, CIBS, Khenpo Lobsang Tsultrim, Lecturer, CIBS, Khenpo Shedrup Konchok, Lecturer, CIBS and Khenpo Jamyang Tsultrim, Matho Gonpa have presented their presentation related to the main theme. The webinar was hosted by Khenpo Jamyang Kunsang, Lecturer and HoD, Department of Sampradaya Shastra, CIBS. The enlightening and informative presentations by the experts were followed by questions and answers through Zoom and CIBS facebook page.

6. Institute's national webinar programme, sixth in series was organized by the Dept. of Sowa Rigpa, CIBS on the theme "The Sowa Rigpa's Perspective on prevention of Covid-19 and Management of Healthy Mind and Body" on 7th August, 2020. Dr. Tsering Phunchok, Rtd. Chief Amchi, SNM Hospital and Dr Padma Gyurmet, Director, National Institute of Sowa Rigpa were the guest speakers. The webinar programme was hosted by Dr. Thinley Yangjor, Reader & HoD, of Sowa Rigpa Dept. CIBS. The enlightening talks were followed by questions and answers. The webinar was conducted through Zoom and CIBS facebook page.

7. Institute's national webinar programme, seventh in series was organized by the Dept. of Sanskrit Baudh Dharshan, CIBS on topic "Vartamansamye Bauddhadharma-darshanasya Prasangikta" on 10th August, 2020. Guest speakers Prof. Ramesh Kumar Dwivedi, Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi and Prof. Pradyumna Shah Singh, HoD, Jain-Buddha Darshan Vibhag, Banaras Hindu University presented their papers on the above topic. The webinar programme was hosted by Raj Kiran, Lecturer, CIBS. The enlightening talks and presentations were followed by questions and answers. The webinar was conducted through Zoom and CIBS facebook page.

8. Institute's national webinar, eight in series was organized by Department of Social Science (Political Science), CIBS on "Influence of Buddhism on Indian Constitution"

on 31st August, 2020. Dr. Thuktan Negi, Assistant Professor, Central University of Himachal Pradesh, Dharamsala, Mrs. Konchok Chorol, Assistant Professor, Political Science, EJM College Leh, Shri Tsewang Gailtsen, Assistant Professor, Political Science, Govt. Degree College, Kargi, Dr. Stanzin Chostak, Assistant Professor, Faculty of Law, Delhi University presented their presentations on the mentioned topic. The webinar was convened and moderated by Dr. Tsering Choldan, Lecturer, Political Science, CIBS. The enlightening talks and presentations were followed by questions and answers. The webinar was conducted through Zoom and CIBS facebook page

9. Institute's national webinar, ninth in series was organized by the Department of Comparative Philosophy, CIBS on the topic "Indian Classical Education System and E-learning: Challenges and solution" on 4th September, 2020. Prof. Rajnish Kumar Shukla, Vice Chancellor, Mahatma Gandhi International Hindi University Vardha, Maharastra and Prof. Sachhinanda Mishra, Philosophy and religious Dept., Kashi Hindu University, Varanasi participated as guest speakers and presented their presentations on stated topic. Prof. Konchok Wangdu, Director CIBS has delivered the introductory speech and Dr. Vipin Kumar Pandey, Head of the Dept. of Comparative Philosophy, CIBS delivered the welcome speech. The entire webinar was hosted by Mrs. Jigmet Lhamo, lecturer, Dept. of Comparative Philosophy, CIBS and Ven. Shanta Negi, Research Scholar, CIBS. The enlightening talks and presentations were followed by questions and answers. The webinar was conducted through Zoom and CIBS facebook page.

10. Two days national webinar was also organized by the Department of Bhot Baudh Darshan on 7th and 8th September, 2020 on the theme "Difficult and Significant Point of the major Buddhist Texts and its practices". The national webinar was attended by several scholars and experts, including Khen Rinpoche Lobzang Gyaktsen, Prof. Konchok Wangdu, Prof. Wangchuk Dorjee, Khenpo Tashi Tsering, Dr. Lobzang Tsewang, Geshe Takpa Kalsang, Lopon Tsultrin=m Gyurmet, Khenpo Dakpa Singyi, Geshe Yeshe Lhundup, Geshe Lobzang Wangchuk, Khenpo Konchok Namdak, Khenpo Shadrup Konchok and Geshe Konchok Namdak. The experts and scholars have presented their presentations on different aspects of the main theme mentioned above. The webinar was conducted through Zoom and CIBS facebook page.

The theme and topics above mentioned webinars were selected by the concerned Departments to meet the aims and objective of the Institute and the subject area of the department to benefit not only the teachers and students but also larger audience in the world, especially during the pandemic caused by the Covid-19. The webinars were technically supported by Ms. Kunzang Dolma, Software Engineer, CIBS.

The Director Prof. Konchok Wangdu thanked all the HoDs, organizers, speakers and audience for making the national webinars a success.

11. STUDENTS EXCHANGE PROGRAMME

Central Institute of Buddhist Studies (CIBS) Leh used to organize students exchange programme with Central Institute of Higher Tibetan Studies (CUTS) during winter vacation.

However, the programme was not organized in the year under report because of the Covid-19 pandemic.

12. EDUCATIONAL TOUR

Central Institute of Buddhist Studies (Deemed to be University) organizes Bharat Darshan (educational tour) for students during every winter vacation. During the educational tour the students visit important historical and archaeological sites in different states of India. This year (2020–21) it was not possible to organize the educational tour due to the Covid-19 pandemic.

13. PUBLICATION

The Institute publishes rare and valuable books on various subjects including the proceedings of the national and international seminars under the title "Ladakh-Prabha". During the year 2020–21, the institute published the following books:

a) University Anthem of CIBS
b) Universe of Knowledge and Research Methodology
c) History of CIBS, Leh
d) National Journal of Buddhist Studies

14. RESEARCH

The Institute has established eight institutional fellowships for Research Scholars. The research works are being conducted in different subjects, i.e., Buddhist Philosophy, Himalayan Buddhist Culture and related areas. Accordingly, at present, nine research scholars are doing research for Ph.D.

15. CAMPUS

The Institute is located 8 kms South of Leh town on the bank of the Indus River in Choglamsar. It has two campuses: the new and the old. The old campus is located on a piece of land measuring 23 Kanals and used for running the classes for the junior wing from Class VI to VIII. It is under the charge of a Headmaster assisted by Trained Graduate Teachers (TGTs) and other staff members. There is a teaching block, a small auditorium, office, and children's library in this campus. A project of the Institute such as Manuscripts Resource Centre and Manuscripts Conservation Centre are also done in the old campus. A Guest House with a capacity to accommodate 20 guests at a time is situated near the old campus.

The new campus is located just half a kilometre away from the old campus built up with separate blocks for Teaching, Administration, Library and Hostels (with a capacity of

one hundred students in each which are separately provided to the monks, boys and girls). There are 60 Residential Quarters for staff situated in the new campus. A sport stadium with facilities of spectators' gallery, dressing room, store etc. is also located in the new campus. An auditorium with seating capacity of 580 people is available to carry out various activities of the Institute. Besides these, a philosophical debate hall, and a students' recreation center are available in the campus to carry out other activities. The construction of one more Hostel for Nun students and four staff quarters for professors are in progress.

16. LIBRARY

The Sherab Gyasched Tsal (*shes-rab rGyas-byed tshal*) library of the Central Institute of Buddhist Studies (Deemed to be University) is a soul-nourishing place for people of any age, and a natural focal point for the meeting of minds. The library is a vital organ of the institute which not only the students and teachers, but also other members of the institute depend upon for seeking information and wisdom. The library is one of the biggest libraries in the entire Himalayan region, disseminating knowledge in Buddhist studies, Tibetology, Ladakh studies and various other subjects. The library has been computerised by installing the Slim Thunmi Software. There are three sections of the library, i.e., 1) General Section, 2) Sungbum/Tibetan section, and 3) Reference Section.

The total collection of 36,935 books in Tibetan, English, Hindi, Sanskrit, Pali and Urdu on Religion, History, Philosophy, Literature, Sociology etc., is available. The Library has a well-collected reference section comprising of Encyclopedias, Dictionaries and Year Books. During the year under report, the Institute purchased 1097 books worth ₹3.33 lakhs. The Library of the Institute has subscribed 31 Indian and foreign research journals and magazines during the year. The newspaper suppliers stopped supplying newspapers in year report due to the Covid-19 pandemic. People visited the library in 2020–21 include 774 students, 77 staff and 11 outsiders.

17. MUSEUM

The Institute has built up a small archaeological Museum with a collection of antiquities and objects-de-art which among other things include sculpture and painting articles of Ladakh, antique photographs and replicas brought from many historical places of India. This is a unique Museum of its kind in Ladakh, which draws attention of tourists as well as the research scholars on a large scale every year.

18. SPECIAL LECTURES/OTHER ACTIVITIES

i) **Gyalsras Kushok Bakula Rinpoche Memorial Lecture Series**: The Institute used to organized Gyalsras Kushok Bakula Rinpoche Memorial Lecture Series every year but it was not held in the year under report due to the Covid-19 crisis.

ii) **Annual/Monthly Magazine:** The Institute also brings out an Annual Magazine entitled "Rig-pa'i Dur tsi" and one monthly News Letters titled Lomai Gatsal in Bhoti to which

the students and the staff contribute articles on different subjects. The activities of the Institute and the achievements of the staff and students having received awards etc., during the year are also highlighted with their photographs. Besides, Green Tara Girls' Hostel brings out a monthly news letter titled "*sGrol-lJang gi sGron-me*". These are purely institutional magazines and these reflect the nature and scope of the Institute absolutely.

iii) **Medical Facilities:** The Institute has a dispensary of its own and provides medicines to the students and the staff. A part-time Doctor visits the Institute every alternate day. The part-time Doctor is assisted by a Staff Nurse and a Nursing Orderly. This arrangement is very useful for the students and the staff. The year 2020–21 has been a challenging year due to the Covid-19 pandemic. The medicines purchased for staff and students were mostly un-used but many items including, sanitizers, disinfectants, vitamins etc. worth ₹68,517 were purchased and distributed freely among the students and the staff. The rest of the un-used medicines are being re-cycled with the agent who supplies medicines for the Institute.

19. SYLLABI

In the formative years, the ten-year syllabi covering the subjects of Hindi, Sanskrit, Buddhist Philosophy and Tibetan Language were in operation. In the year 1973, the Institute was affiliated to the Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi, U.P., and accordingly, special syllabi were drawn up to fulfil the requirements of the border area students and to achieve the aims and objectives for which the Institute was initially established. Consequent upon the conferment of Deemed to be University status to the CIBS, Leh in January 2016, the Institute amended the curriculum suitability by introducing the semester system. The curriculum has been implemented after conducting a series of workshops by inviting experts in the field and by amending the same by the Heads of Departments of the subjects concerned of other universities.

Thereafter, it was placed before the Academic Council for consideration and approval.

The compulsory subjects are Hindi, English, Tibetan Literature and Buddhist Philosophy and the optional subjects are Political Science, Economics, Pali, Sanskrit, Comparative Philosophy, Sowa Rigpa, Wood Carving, Sculpture and Painting. The degrees of Acharya, Shastri, Uttar Madhyama and Purva Madhyama are being awarded to the successful candidates. The equivalent degrees are given below:

1. Purva Madhyama	Matriculation
2. Uttar Madhyama	Higher Secondary
3. Shastri (with English)	B.A.
4. Acharya	M.A.

The Institute included the Sampradya Shastra of Mahayana Buddhism in Shasrti and

Acharya courses as one of the compulsory optional subjects, which has been welcomed by the faculty members, students and other scholars of Ladakh.

CERTIFICATE COURSES

A. *Six-month online certificate courses*

1. Certificate Course in Bhoti Language and Literature
2. Certificate Course in Buddhism

The three-month certificate courses were started on 1st July, 2020, participated by national and international students. The course programmes were developed and organized by the Departments of Bhot Baudh Dharshan, Baudh Literature and Baudh Puranic History, CIBS.

Certificate Course in Bhoti Language and Literature was successfully conducted by Khenpo Konchok Thupstan, HoD, Dept. of Baudh Literature and Thupstan Rigzin, Ph.D. Scholar from the Institute. Whereas the Certificate Course in Buddhism was conducted by Dr. Stanzin Mingyur, Lecturer of history and Ms. Jigmed Lhamo, Lecturer of comparative philosophy. The student participants were awarded with certificates at successful completion.

B. *Online certificate course on Introduction to Buddhism for Japanese people.*

The establishment of cordial relations between India and Japan said to have begun in the 6th century when Buddhism was introduced to Japan. Indian culture, filtered through Buddhism, has had a great impact on Japanese culture, and this is the source of the Japanese people's sense of closeness to India. In recent years the Japanese developed a strong bond with Ladakh in India because of the living Buddhist culture and heritage. Keeping this in view Central Institute of Buddhist Studies (Deemed to be University) Leh has initiated a six months online course on "Introduction to Tibetan Buddhist Philosophy" in collaboration with Julay Ladakh, an organization in Japan engaged in various activities to bridge Japan and Ladakh. Being one of the largest institutions in the Himalayas for Buddhist studies, CIBS Leh is facilitating different programmes to draw global audience. The recently initiated programme for the Japanese involves intellectuals and institutions to further relation with Japan through Buddhist studies, rooted in the Nalanda tradition of ancient Indian wisdom. The main aim is to establish global network for Buddhist studies by introducing academic exchange programmes and courses. The intellectuals from CIBS Leh will certainly benefit the Japanese people through the online course on "Introduction to Tibetan Buddhist Philosophy". The course was conducted online by Prof. Konchok Wangdu, Director CIBS and translated into Japanese by Shri Skarma Gurmet, the Director of Juley Ladakh.

C. *Ten-day Online Course on Introduction to Buddhist Science*

A 10 day online course on Introduction to Buddhist Science was conducted by Central Institute of Buddhist Studies, Deemed to be University, Choglamsar, Ladakh from 18th-27th July 2020. This course was taught by Dr. Nilza Wangmo via Zoom Meeting and Facebook live. There were a total of 194 registrations for this course of which about 40 participants were regular attendees on Zoom Meeting. There were 1K-7K views on

Facebook live through all the sessions. The participants with 75% attendance were awarded with an e-Certificate for participation.

During the 10 day sessions from 4–5 pm various topics from Buddhist Science were taught and discussed such as the Concept of Mind in Buddhism and its divisions, Mind and Mental Factors, The Two Truths, The Four Noble Truths, the Paradox of Mind-Brain briefly touching upon Chapter 2 of Pramāṇavārttika (Commentary on Valid Cognition; Tib. *tshad ma rnam 'grel*) by Acharya Dharmakirti, the state of Thugdam (Meditative Equipoise), and Universal Ethics focused on the framework of SEE (Social, Emotional and Ethical) Learning K-12 Curriculum. The last 10–15 minute slot of each session was kept for Q&A.

The participants were primarily university research scholars from CIBS, Leh, Delhi University, Jawaharlal Nehru University, New Delhi, B.R. Ambedkar University, Lucknow, Reykjavik University, TISS Mumbai, Uttarakhand Technical University, FU, Berlin. There were also Assistant Professors and Guest Faculties from Delhi University, Dept of Buddhist Studies, Jammu University, Dept. of Pali, Mumbai University, NNM Nalanda Bihar. The participants took active role in the Q&A sessions and expressed their deep interest in learning more about Buddhist Science.

20. STIPEND TO STUDENTS

The stipend ranging from ₹820 to ₹1010 per student per month is presently granted to students of CIBS, Leh. Besides, the stipend is being paid to the students of Duzin Photang School, Zanskar; Baudh Darshan Sanskrit Vidyalaya,Mandogalu and 50 feeder Gonpa/ Nunnery schools. Thus, the total amount of ₹182.46 lakhs was disbursed during the year toward stipend to the students.

21. FREE DISTRIBUTION OF TEXT/NOTE BOOKS TO STUDENTS

The students studying in the Institute and its branches and feeder Gonpa/Nunnery schools come from most back-ward and remote areas of the region and belong to Schedule Tribe community. Accordingly, under the Tribunal Sub-Plan, the Institute arranged the free distribution of Text/Note Books to all students. During the year under report, Text/ Note books worth ₹11,95,389 were purchased and freely distributed among the students of CIBS and its branches and feeder Gonpa/Nunnery schools located in different parts of the region.

22. EXAMINATION RESULT

The examinations from Class VI to Class VIII were conducted by the Headmaster, junior wing of the Institute. The examinations from Purva Madhyama-I to Acharya-II (M.A.) were conducted by the Examination Department under the charge of a faculty member. The result of each class of the academic year 2020-21 is placed as Annexure at page 84.

23. GONPA/NUNNERY SCHOOLS

To achieve its objectives, the Institute is running 50 Gonpa/Nunnery Schools in different monasteries which are extremely popular in the region. These schools are being run in collaboration with the respective monasteries, and accordingly, they arrange classrooms, hostel facilities and also provide ritual teachings. The Institute provides one to three teachers depending on the number of enrolment in a particular school. Besides, the furniture, stationery, text books and note books and stipend to the students etc., are being provided by the Institute. The teachers appointed by the Institute provide the modern elementary education viz. Bhoti, Hindi, English, Mathematics, Social Studies etc., in addition to the monastic education. During the year under report, 751 students were enrolled in the 50 Gonpa/Nunnery schools located in different monasteries of Ladakh. The school-wise and class-wise enrolment of the students for the year 2020-21 is placed as Annexure at page 85.

24. ANNUAL FUNCTION

Due to the Covid-19 pandemic a very simple event to mark the 61st Annual Day of Central Institute of Buddhist Studies (Deemed to be University) was organized to release video messages from religious heads and former lectures and teachers through Institute's YouTube channel on 23rd October, 2020. Refreshment was also organized for academic and non-academic staffs.

25. OTHER IMPORTANT EVENTS

i) ***Birth Anniversary of Dr. Radhakrishnan:*** Central Institute of Buddhist Studies (Deemed to be University) celebrated Teachers' Day on 5th September, 2020 to mark the birth anniversary of Dr. Radhakrishnan. This year, due to the Covid-19 outbreak, it was not possible to celebrate the Teachers' Day at the institute like previous years. However, considering the teachers' role is paramount in the life of students as a friend, mentor and coach, the institute celebrated Teachers' Day on 5th September, 2020 through following hashtags (#) campaign on social media:

#ourteachersourheroes
#teachersfromindia

The campaign was participated by students, research scholars, and non-teaching staff of the institute to honour the teachers and also the retired teachers who have made significant contributions in the growth and development of students and the institution. The students and non-teaching staff of the institute expressed their gratitude to respected teachers through social media.

ii) ***Hindi Divas:*** The Institute celebrate Hindi Divas on 14th September every year by conducting various types of literary competitions viz. essay writing, poem recitation, lecture delivery etc., in Hindi language. In 2020, Hindi Diwas and Hindi Pakhwada were organized for office staff to promote work in Hindi language in the office of the

Institute. An essay writing competition was organized in Hindi among officers and staff working in the office of the institute by maintaining Covid-19 SOPs issued by the U.T. Administration.

iii) ***Swachh Bharat Abhiyan:*** The Govt. of India on the initiative of Hon'ble Prime Minister of India Shri Narendra Modi launched Swachh Bharat Abhiyan with a view to make the whole country neat and clean. Accordingly, the Central Institute of Buddhist Studies, Leh keeping in view the initiative in mind, used clean the campus and surrounding areas of the Institute by involving the staff and students on the following occasion. However, due to the Covid-19 pandemic, the cleanliness drive was not held in the year under report.

iv) ***World Environment Day:*** The Institute used to observe World Environment Day on 5th June every year. However, it was not held due to the Covid-19 crisis in the year under report.

v) ***Birth Anniversary of Mahatma Gandhi:*** Birth Anniversary of Mahatma Gandhi is usually observed in the institute on 2nd October every year. However, the Institute has decided not to organize the event in year 2020–21due to the Covid-19 pandemic.

vi) ***World Students' Day:*** CIBS used to celebrate World Students' Day every year on October 15 to commemorate the former president APJ Abdul Kalam's birthday. However, the Institute has decided not to organize the event in year 2020–21 due to the Covid-19 pandemic.

vii) ***Indipendence Day:*** Director CIBS Prof. Konchok Wangdu hoisted the National Flag at the main campus, today on Independence Day, 2020. The seventy-three years of independence from the British rule is being celebrated at the campus in the presence of a limited academic and non-academic staffs in a subdued manner due to the corona virus crisis. The director applauded the Jawans who lost their lives at India-China border recently and the grit and resilience of the country's front-line workers in fight against Covid-19, which has killed many people in the country. He also highlighted the activities undertaken by CIBS in the field of education during the Covid-19 outbreak. At last, the director extended greetings to all countrymen on 74th Independence Day.

viii) ***International Women Day:*** The Institute used to organize International Women's Day with different themes every year but due to the Covid-19 pandemic, the Institute has decided not to organize the event in year 2020–21

ix) ***International Yoga Day:*** Central Institute of Buddhist Studies (Deemed to be University) observed International Yoga Day online through CIBS's official Youtube premieres on 21 June, 2020. In view of the prevailing Covid-19 pandemic situation Yoga Day was observed with minimum participants headed by Dr Thinles Yangjor, Reader and HoD, Sowa Rigpa Department of CIBS Leh with proper care of SOPs and precautions.

The Yoga session was participated by former students of CIBS and Yoga Instructors, Stanzin Chosrab, Tsering Yangchen and Jigmet Rinchen. They have demonstrated several basic Yoga Asana (body postures). A comprehensive commentary by Dolma

Tsering, a research assistant from the Institute complemented the whole Yoga session.

The Yoga session was followed by a talk on "Yoga and Sowa Rigpa" by Dr Thinles Yangjor. "Yoga is an ancient practice that brings together mind and body, purifies the energy locations of the body, reinforces the functions of the organs, cleans the spirit and soothes the mental state of mind", said Dr Yangjor. He stressed on the connection of five elements (space, wind, fore, water, earth), which in turn is connected to the three principle elements of traditional Tibetan medicine "rlung", "Trikspa", "Padkan" which utilizes the mastery of breath as well as internal subtle energies (Canals and chakras).

At last Public Relation Officer/Media Incharge Dr. Sonam Wangchok on behalf of the organizing committee thanked the Director of CIBS Prof. Konchok Wangdu and all other participants who helped the organizing committee to make the programme a success. While talking about the importance of Yoga particularly during these days of Lockdown and Covid-19 Restrictions, Dr Sonam said Yoga is a great means to reduce the level of stress and increase sound and healthy life.

26. WINTER CAMP

The Institute on the initiative of the Students' Welfare Committee organized one month winter camp every year to improve the academic standard of the students, lingual skills and boosting self-confidence along with the awareness for preservation and promotion of the cultural heritage of the region. A number of activities are organized during the camp such as, philosophical debate, prayer, meditation, dance, song, games, talks, interaction with educationists, leaders and other experts. However, it was not possible to organize the winter camp during 2020-21 due to the Covid-19 pandemic.

27. PROJECT OF THE COMPILATION OF ENCYCLOPEDIA OF HIMALAYAN BUDDHIST CULTURE

The Board of Management of the Institute approved the project of the compilation of Encyclopedia of Himalayan Buddhist Culture. The project was initially approved for a period of five years and it has been proposed to compile the Encyclopedia in ten volumes. The project was launched by engaging scholars on contractual basis. The project is in progress under the supervision of a Chief Editor assisted by two Editors and three Research Assistants. Two volumes of the Encyclopaedia covering the Ladakh region have already been published.

Another two volumes covering the region of Himachal Pradesh is completed and is under publication. The work on the first volume of philosophical and theoretical basis of Himalayan Buddhist Culture is in progress. In the first volume, there are 22 chapters. Out of which, 15 chapters are completed and seven chapters in progress.

28. MANUSCRIPTS RESOURCE CENTRE

The National Mission for Manuscripts, Govt. of India has designated CIBS, Leh as

the Manuscripts Resource Centre and Manuscripts Conservation Centre for the Ladakh region. Accordingly, the Institute has been carrying out the assigned job by engaging scholars on contractual basis. The Institute so far has documented about 37722 manuscripts from 2389 different Monasteries/Palaces/individuals of Ladakh region. The Institute is trying to document all available rare manuscripts available in the different monasteries of Ladakh region.

The Institute has also setup a laboratory for conservation of manuscripts. So far the Institute has conserved 47,040 folios of rare manuscripts which are on deterioration stage in different monasteries such as, Matho monastery, Hemis monastery and other individual households.

29. PLACEMENT OF STUDENTS AFTER OBTAINING THEIR DEGREES/DIPLOMAS

The Institute provides the degree of Ph.D.; Acharya (equivalent to M.A.) in Bhot Baudh Darshan, Sanskrit Baudh Darshan, Ancient Buddhist History, Bhot Literature and Comparative Philosophy; Shastri (equivalent to B.A); Uttar Madyama (equivalent to +2), and Purva Madyama (equivalent to Matriculation). Besides, Six Years' diplomas in Sowa Rigpa (Baudh Medical Science), Scroll Painting (Thankhas), Sculpture and Wood Carving are also being provided. It is observed that none of the students having obtained the above degrees from CIBS, Leh are without job. The students having passed their respective degrees/diplomas easily get appointments, especially in the Education Department of Jammu & Kashmir, Kendriya Vidyalaya, Navodaya Vidyalaya and Private Schools and actively work for the preservation and promotion of the cultural heritage of the region by involving the students of the respective schools. The candidates having the above degrees/diplomas have good opportunity for appointment in the Department of Akashwani and Doordarshan, as they prefer for the candidates having good knowledge of the local language. The Institute feels proud that the Alumni of CIBS, Leh have good positions in the State and the Central Government Services recruited through Kashmir PSC and UPSC. Besides, the Alumni of the Institute are serving for the country in the Military and Para-Military forces all over India. Some Alumni of the Institute are working in eminent Universities such as Vishva Bharati University,Shantinekatan; Jawahar Lal Nehru University, Delhi etc. There are numbers of officers in the police department of Jammu and Kashmir who have obtained degrees from CIBS, Leh. The branch and feeder schools of CIBS, Leh are run by appointing the alumni of CIBS, Leh which help the preservation and promotion of the cultural heritage of the region. The students having the diploma in Sowa Rigpa (Baudh Medical Science) have been engaged in the State Health Department under the "Centrally Sponsored Scheme," National Health Mission, to look after the patients throughout the region. The students having diploma in Thangka Painting, Sculpture and Wood Carving are earning handsome amount by preparing the Thangkas, Statues and Wood Carving works for the local people as well as tourists visiting Ladakh. Besides, the candidates having the above diplomas are appointed as instructors in the organizations running similar courses.

In this way, thousands of students have passed and obtained various degrees/ diplomas from CIBS, Leh and none of them are found unemployed which is a great achievement of CIBS, Leh.

30. REVISION AND EDITING OF TEXT BOOKS

Text books of Bhoti Baudh Darshan, Baudh Puranic History and Bhoti Literature for Shasti-I (second semester) and Shastri-II (first semester) were revised and edited during the year 2020–21.

31. DUZIN PHOTANG SCHOOL, ZANSKAR

i) ***Brief History:*** In 1980, His Holiness Dalai Lama XIV paid his first visit to Zanskar on the invitation of the Buddhist Association, Zanskar and felt it necessary to open a school for the preservation of the rich culture of the area. Accordingly, he donated some funds to the Buddhist Association, Zanskar for the purpose. In September 1984, the Buddhist Association established a School at Duzin Photang for the benefit of the poor and needy students of the area. Initially, 101 students were admitted in the School and three teachers were also appointed. The hostel facilities were also provided to the students coming from far-flung areas. The Buddhist residents of Zanskar also donated funds for the improvement and upgradation of the School. H.H. the Dalai Lama, during his second visit to Zanskar in 1988, further donated funds for the development of the School. The Buddhist Association, Zanskar and the people of Zanskar had represented to the then Hon'ble Prime Minister of India, Mr. Rajiv Gandhi regarding the importance of the School with a request to take over the school by the Govt. of India on the pattern of the Central Institute of Buddhist Studies, Leh. The Hon'ble Prime Minister of India Shri Rajiv Gandhi paid his visit in March/April 1988 to Zanskar and decided that the Govt. of India would take over D.P.S. as a branch school of CIBS, Leh w.e.f. Ist November 1989. Since then, the School is being run under the financial and administrative control of CIBS, Leh-Ladakh. A campus consisting of teaching block, a small library, a Multi-purpose Hall, Hostel for 100 students, some Staff Quarters and a play ground, is available. It is one of the best campuses in the entire Zanskar valley. A bus is also available to lift the day scholars of the school. Zanskar valley is an isolated place, even remains cut off from Leh and Kargil for about 6 to 7 months in a year during winter.

(ii) ***Examination Result:*** The annual examination of the students from class I to VIII of Duzin Photang School, Zanskar is being conducted by the School under the supervision of the Head Master. The annual examination of class IX and X are being conducted by Central Institute of Buddhist Studies, Leh. An examination centre has been set up at Duzin Photang School, Zanskar, keeping in view the hardship faced by the students for coming to Leh for examination purpose. The class-wise enrolment of students along with the result of each class for the academic year 2020–21 is placed as Annexure at page 87.

(iii) *Other activities:* The school is carrying out various co-curricular activities viz, Annual Sports- cum-Literary Competitions, Conduct of Educational Tours to visit the historical places/monasteries, celebration of birth anniversary of important national level personalities, conduct of monthly lecture competitions etc. Besides, the School has a small Library with good collection of books for the students. The school also actively participates in parade and cultural programmes organized by Union Territory of Ladakh on the occasion of Republic Day and Independence Day.

iv) *Staff strength:* The staff strength of Duzin Photang School for the year under report is placed as Annexure at page 88.

32. BAUDDHA DARSHAN SANSKRIT VIDYALAYA, KEYLONG, DISTRICT LAHOUL & SPITI (H.P.)

(i) *Brief History:* The Bauddha Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong, Lahaul-Spiti (H.P) was established in the year, 1976 to preserve the most valuable Buddhist Arts, Culture and Language of the Himalayan region viz; Lahaul, Spiti, Kinnaur, Pangi, Kullu and Manali. Prior to 1959, Scholars, Novices and Monks of this area used to go Tibet to pursue higher Monastic Education which came to an end in 1959 due to historical reasons. Thus the Bauddha Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong came into existence to continue the old age practice to provide monastic education to the young novices. Initially, the Vidyalaya was run with the funds raised by public donation. Subsequently, the Govt. of India, Ministry of Culture provided some financial assistance under the scheme of Financial Assistance for Development of Buddhist/ Tibetan Organisations.The State Government of Himachal Pradesh also provided some financial assistance for its maintenance which was subsequently discontinued. The people of the region tried their best for the take over of the Vidyalaya as an Autonomous Organization of the Govt. of India on the pattern of Central Institute of Buddhist Studies, Leh and Central University of Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi. But, it could not be taken over as an Autonomous Organization of the Govt. of India, Ministry of Culture. However later, the Govt. of India, Ministry of Culture on the recommendation of the Board of Management, CIBS, Leh decided to take over the Vidyalaya as a branch school of CIBS, Leh on the pattern of Duzin Photang School, Zanskar. Accordingly, CIBS, Leh took over the Bauddha Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong, H.P. as a branch School from 5 March 2010 in pursuance to Govt. of India, Ministry of Culture's letter No. F.1-11/2004-BTI dated 05-03-2010. Since then the administration of the Vidyalaya is being looked after by CIBS, Leh with full financial support. Consequent upon the take over as Branch school of CIBS, Leh, the number of students is likely to increase. There are one Headmaster, six Trained Graduate Teachers (TGTs), one Bhoti Teacher, one Buddhist Philosophy Teacher, one UDC and three Class-IV employees working in the Vidyalaya. The Central Institute of Buddhist Studies, Leh provides the salaries of the Staff, stipend to the students, furniture/ furnishing items and other day-today expenditure of the Vidyalaya on the pattern of Duzin Photang School, Zanskar. Subsequently, the Board of Management decided to

shift the Vidyalaya to Mandogalu, Mandi, H.P., where rent-free accommodation is provided by the Drigung Kagyud Society.

(ii) ***Examination of BDSV, Keylong:*** The Annual Examination of Class I to X of the Vidyalaya is being conducted under the supervision of the Headmaster of the said Vidyalaya. The Annual Examination of class-IX and X is being conducted by the Central Institute of Buddhist Studies, Leh. The Class-wise enrolment of students along with the result of each class for the Academic Year 2020–21 is placed as Annexure at page 89.

(iii) ***Staff Strength:*** The staff strength of the Bauddha Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong, H.P is placed as Annexure at page 90.

COMPOSITION OF SOCIETY

S.No.	Name and Address	Position
1.	Shri Raghvendra Singh Secretary to the Govt. of India Ministry of Culture	President
2.	AS&FA Govt. of India, Ministry of Culture	Member (Ex Officio)
3.	Joint Secretary, BTI Govt. of India, Ministry of Culture	Member (Ex Officio)
4.	One Nominee of the Department of Higher Education Ministry of Education, Govt. of India	Member (Ex Officio)
5.	Secretary or Nominee of the University Grants Commission	Member (Ex Officio)
6.	Deputy Commissioner, Leh	Member (Ex Officio)
7.	One representative of monasteries of Ladakh to be selected by the All Ladakh Gonpa Association (Rev. Shatup Chamba, President)	Member (non-official)
8.	One representative of Ladakh Buddhist Association Shri Thupstan Chhewang, President,	Member (non-official)
9-10	Two Eminent Buddhsit Educationists Nominated by Central Government	Member (non- official)
	1. Dr. Ravindra Panth, Former V.C. NNM, Nalanda	Member (non-official)
	2. Prof. Hira Pal Gang Negi Department of Buddhist Studies University of Delhi, Delhi	Member (non-official)
11.	Vice Chancellor Central Institute of Buddhist Studies, Leh	Member (non-official)
12-13.	Two Deans of Faculties Central Institute of Buddhist Studies, Leh	
	1. Geshe Dakpa Kalsang Faculty of Buddhist Philosophy, CIBS, Leh	Member (Ex-Officio)
	2. Dr. Thinley Yangjor Faculty of Sowa Rigpa & Shipa Vidya	Member (Ex-Officio)
14.	Registrar Central Institute of Buddhist Studies, Leh	Secretary (Ex-Officio)

COMPOSITION OF BOARD OF MANAGEMENT, CIBS, LEH

S.No.	*Name and Address*	*Position*
1.	Director/Vice Chancellor CIBS, Leh	Chairperson (Ex-officio)
2-3.	Two Dean of Faculty	
	1. Geshe Dakpa Kalsang Dean, CIBS	Member (Ex-officio)
	2. Khanpo Konchok Thupstan Reader, CIBS, Leh	Member (Ex-officio)
4-6.	Three Eminent Academician nominated by Chancellor	
	1. Mr. Amar Sable Member of Parliament (Rajya Sabha)	Member
	2. Geshe Ngawang Samten Vice-Chancellor, CIHTS, Sarnath	Member
	3. Dr. Tashi Paljor Former Principal, CIBS	Member
7.	One Eminent Academician to be Nominated by Central Govt. (Under Process)	Member
8-9.	Two Teaching Faculty (From Professor/Associate Professor)	
	1. Vacant after the retirement of the incumbent	Member
	2. Dr. Thinley Yangjor Reader, CIBS, Leh.	Member
10-13.	Four Nominees of the Society	
	1. Ms. Amita Prasad Sarbhai Joint Secy, MoC (BTI)	Member (Ex-officio)
	2. Mrs. Deepika Pokharna Director (BTI) MoC	Member (Ex-officio)
	3. Shri Thupstan Chhewang, President, LBA	Member
	4. Rev. Shatup Chamba, President, LGA	Member
14.	Registrar CIBS	Secretary (Ex-Officio)

Annexure

COMPOSITION OF ACADEMIC COMMITTEE

S.No.	*Name and Address*	*Position*
1.	Director/Vice Chancellor	Chairperson
2.	Geshe Dakpa Kalzang HoD, Dept. of Bhot Baudh Darshan	Member
3.	Khenpo Konchok Thupstan HoD, Dept. of Bhoti Literature	Member
4.	Khanpo Shedrup Konchok HoD, Dept. of Bhot Puranic History	Member
5.	Dr. Thinley Yangjor HoD, Dept. of Sowa Rigpa and Astrology	Member
6.	Dr D.K. Patnayak HoD, Dept. of Modern Languages	Member
7.	Khenpo Konchok Thupstan HoD, Dept. of Classical Languages (look after)	Member
8.	Dr. S.K. Gautam HoD, Dept. of Social Sciences	Member
9.	Shri Tsering Dorje HoD, Dept. of Himalayan Arts & Crafts	Member
10.	Khanpo Jamyang Kunzang HoD, Dept. Sampradaya Shastra	Member
11.	Dr. Vipin Kumar Pandey HoD, Dept. of Comparative Philosophy	Member
12.	Registrar	Secretary

COMPOSITION OF FINANCE COMMITTEE, CIBS, LEH

S.No.	*Name and Address*	*Position*
1.	Director/Vice Chancellor	Chairperson
2.	Person to be nominated by the Society of the Institute Shri Harish Kumar Director (Finance), MoC	Member
3.	Two nominees of the Board of Management one shall be a member of the board:	
	1. Dr. Tashi Paljor Former Principal IBS, Leh	Member
	2. Shri Jigmet Namgyal Chief Controller of Finance LAHDC, Leh	Member
4.	A representative of the Central Government	Members
5.	Shri Maneesh Ranjan, Under Secretary (BTI Section), MoC	Member
6.	Finance Officer of the institute (presently vacant)	Secretary

Annexure

COMPOSITION OF PUBLICATION COMMITTEE, CIBS, LEH

S.No.	*Name and Address*	*Position*
1.	Director/Vice Chancellor	Chairperson
2.	Dr. Pema Tenzin Publication Officer CIHTS, Saranath, Varanasi (UP)	Member
3.	Prof. Jamyang Gyaltsen Chief Editor, Encyclopedia of Himalayan Buddhist Culture, CIBS Leh	Member
4.	Shri Tsultrim Gyatso (Retd) Tashi Thongmon, Choglamsar, Leh, Ladakh	Member
5.	Administrative Officer CIBS, Leh	Member
6.	Dr. Konchok Rigzen Research Officer CIBS, Leh	Member Secretary

Annexure

COMPOSITION OF LIBRARY COMMITTEE, CIBS, LEH

S.No.	*Name and Address*	*Position*
1.	Director/Vice Chancellor	Chairperson
2.	Librarian District Library, Leh	Member
3.	Dr. Tashi Samphel Director Srongtsan Library, Dehradun	Member
4.	Rev. Lagdor Director Tibetan Library and Archives Dharamsala (H.P.)	Member
5.	Library & Information Officer CIBS, Leh	Member-Secretary

Annexure

COMPOSITION OF RESEARCH COMMITTEE, CIBS, LEH

S.No.	*Name and Address*	*Position*
1.	Director/Vice Chancellor	Chairperson
2.	Prof. Ram Nandan Singh Department of Buddhist Studies Jammu University	Member
3.	Dr. Gurmet Dorjey Director CIHCS, Dahung, Arunachal Pradesh	Member
4.	Prof. Lobzang Tsewang (Retd) Shey Village, Leh Ladakh	Member
5.	Dr. Konchok Rigzen Research Officer CIBS Leh	Member Secretary

Annexure

STAFF STRENGTH CATEGORY-WISE OF CIBS, LEH

A. ACADEMIC POSTS

S. No.	*Name of Post*	*Pay Level*	*Sanct. Post*
1.	Director	14	01
2.	Professor	13A	04
3.	Reader	12	09
4.	Lecturers	10	23
5.	Master Craftsman	10	01
6.	T.G.T.	07	12
7.	Instructor (WC)	05	01
8.	Gonpa Teacher	05	100

B. NON TEACHING STAFF

1.	Adm. Officer	11	1
2.	Addl. Adm. Officer	11	1
3.	Office Superintendent	06	1
4.	Accountant	06	1
5.	Staff Nurse	06	1
6.	P.A.	06	1
7.	Head Assistant	06	1
8.	Stenographer	05	1
9.	Office Assistant	04	4
10.	Cashier	04	1
11.	Store Keeper	04	1
12.	LDC	02	1
13.	Pump-Operator	04	1
14.	Driver	04	2
15.	Caretaker	04	1
16.	Sr. Guardsman	02	1
17.	Guardsman	01	4

S. No.	Name of Post	Pay Level	Sanct. Post
18.	Jamadar	01	1
19.	Peon	01	6
20.	Hostel Cook	01	4
21.	Hostel Bearer	01	1
22.	Canteen Bearer	01	1
23	Nursing Orderly	01	1
24.	Mali	01	1
25.	Safiawala	01	3
	C. LIBRARY STAFF		
25.	Library and Information Officer	10	1
26.	Asstt. Editor Cum Cataloguer	06	1
27.	Library Information Asstt.	06	1
	D. RESEARCH WING		
29.	Research Officer	10	1
30.	Translator	07	1

Annexure

RESULT OF THE STUDENTS OF THE CIBS, LEH FOR THE YEAR 2020-2021

S.No.	Class	No. of Students	Appeared	Passed	Pass % enrolled
A. University Classes					
1.	P.M. I	98	88	66	67
2.	P.M. II	76	76	66	86
3.	U.M. I	57	57	53	92
4.	U.M. II	44	44	43	97
5.	Shastri I	39	37	37	100
6.	Shastri II	39	38	38	100
7.	Shastri III	15	14	14	100
8.	Acharya I	21	20	20	100
9.	Acharya I (Private)	15	15	15	100
10.	Acharya II	21	21	21	100
11.	Acharya II (Private)	07	07	07	100
	Total	**432**	**427**	**380**	
B. Traditional Himalayan Arts					
1.	Wood Carving	02	02	02	100
2.	Sculpture	11	09	09	100
3.	Painting	16	16	16	100
4.	Astrology Course	00	00	00	00
5.	Sowa Rigpa-I	06	06	03	50
6.	Sowa Rigpa-II	18	17	02	11
7.	Sowa Rigpa-III	08	08	04	50
8.	Sowa Rigpa-IV	02	02	02	100
9.	Sowa Rigpa-V	02	02	02	100
	Total	**65**	**62**	**40**	
Grant Total A+B		**632**	**624**	**554**	

Annexure

SCHOOL-WISE AND CLASS-WISE ENROLMENT OF STUDENTS OF THE GONPA/NUNNERY SCHOOLS OF CIBS, LEH FOR THE YEAR 2020–21

S.No.	Name of Gonpa/ Nunnery School	Classwise total enrollment									No. of Teachers Posted
		1st	2nd	3rd	4th	5th	6th	7th	8th	Total	
1	Hemis Gonpa	01	05	06	08	08	16	21	35	100	5
2	Shachukul Gonpa	07	01	02	06	04	06	10	–	36	3
3	Chemday Gonpa	01	05	03	02	01	–	–	–	12	2
4	Anlay Gonpa	03	01	07	01	03	–	–	–	15	2
5	Karma Dupgyud Chosling	02	–	04	10	04	–	–	–	20	2
6	Likir Gonpa	03	03	01	05	05	–	–	–	17	3
7	Thiksay Gonpa	–	–	01	01	04	–	–	–	06	1
8	Samstanling Gonpa	01	03	03	03	06	–	–	–	16	2
9	Spituk Gonpa	06	08	07	05	03	–	–	–	29	2
10	Phayang Gonpa	–	02	–	05	–	–	–	–	07	1
11	Gyudzin Tantric Gonpa	–	–	02	–	02	–	–	–	04	1
12	Matho Gonpa	–	–	–	–	02	–	–	–	02	1
13	Hanuthang Gonpa	–	–	–	01	02	–	–	–	03	1
14	Stakna Gonpa	01	02	02	04	02	–	–	–	11	2
15	Skyurbuchan Gonpa	–	02	–	06	–	–	–	–	08	1
16	Nyoma Gonpa	03	–	01	–	01	–	–	–	05	1
17	Chushul Gonpa	–	07	06	05	03	–	–	–	21	2
18	Rizong Gonpa	06	03	01	02	–	–	–	–	12	2
19	Disket Gonpa	02	02	–	03	03	–	–	–	10	1
20	Yarma Gonbo	02	04	01	01	01	–	–	–	09	1
21	Bardan Gonpa	05	06	–	02	02	–	–	–	15	2
22	Korzok Gonpa	05	–	03	01	02	–	–	–	11	2
23	Karsha Gonpa	02	01	01	07	08	–	–	–	19	2
24	Lamayuru Gonpa	02	04	01	01	02	–	–	–	10	2
25	Phukthar Gonpa	–	–	01	–	03	05	03	02	14	3
26	Rangdum Gonpa	03	04	01	01	02	–	–	–	11	2

S.No.	Name of Gonpa/ Nunnery School	Classwise total enrollment									No. of Teachers Posted
		1st	2nd	3rd	4th	5th	6th	7th	8th	Total	
27	Muney Gonpa	03	02	04	01	–	–	–	–	10	1
28	Zongkhul Gonpa	–	–	04	–	–	–	–	–	04	1
29	Stongdey Gonpa	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
30	Skakrimo Gonpa	–	04	06	–	01	–	–	–	11	1
31	Paldar Gonpa	20	13	13	13	14	–	–	–	73	3
32	Key Gonpa	–	–	10	07	03	–	–	–	20	2
33	Tangyud Gonpa	–	02	06	–	03	–	–	–	11	2
34	Nalanda Gonpa	–	01	–	03	–	–	–	–	04	2
35	Urgyan Sangnag Choling Gonpa School, Kungri, Spiti	–	04	05	09	06	–	–	–	24	1
	NUNNERY SCHOOL										
36	Tingmosgang Nunnery	–	01	03	04	02	–	–	–	10	1
37	Skitmang Nunnery	01	03	01	03	–	–	–	–	09	2
38	Chulichan Nunnery	04	01	01	–	01	–	–	–	07	1
39	Bodhkharbu Nunnery	–	03	02	01	02	–	–	–	08	1
40	Wakha Nunnery	01	–	01	02	01	–	–	–	05	1
41	Shargol Nunnery	01	01	02	–	–	–	–	–	04	1
42	Zangla Nunnery	02	06	04	02	01	–	–	–	15	1
43	Karsha Nunnery	–	04	05	09	06	–	–	–	24	2
44	Tashi Chosling Nunnery	01	07	–	01	03	–	–	–	12	2
45	Skaya Nunnery	–	01	02	03	05	–	–	–	11	2
46	Yangchan Choling	–	–	–	01	06	–	–	–	07	2
47	Tungri Nunnery	02	01	04	03	02	–	–	–	12	2
48	Dorje Zong Nunnery	05	02	03	03	05	–	–	–	18	1
49	Fakmoling Nunnery	07	03	04	04	03	–	–	–	21	2
50	Deachen Choling Nunnery	–	04	–	05	–	–	–	–	09	2
Grand Total		**102**	**126**	**134**	**154**	**137**	**27**	**34**	**37**	**751**	**84**

Annexure

RESULT OF THE STUDENTS OF DUZIN PHOTANG SCHOOL ZANSKAR, LEH-LADAKH FOR THE YEAR 2020-2021

S.No.	*Class*	*No. of students enrolled*	*Appeared*	*Passed*	*Pass %*
1.	1st A	33	33	33	100
2.	1st B	36	36	36	100
3.	2nd	35	35	35	100
4.	3rd	34	34	34	100
5.	4th	35	35	35	100
6.	5th	39	39	39	100
7.	6th	41	41	41	100
8.	7th	39	39	39	100
8.	8th	26	26	26	100
9.	PM-I	18	18	18	100
10.	PM-II	15	15	15	100
	Total	**351**	**351**	**351**	100

THE STAFF STRENGTH OF THE DUZIN PHOTANG SCHOOL, ZANSKAR

		Grade (in ₹)	*Sanct. Post*
	A. TEACHANG STAFF		
1.	Headmaster	Pay Level-9	1
2.	T.G.T.	Pay Level-7	7
3.	Primary Teacher	Pay Level-5	5
4.	PET (Contractual)	44900 (Fixed)	1
5.	Computer Inst. (Contractual)	44900 (fixed)	1
	B. NON-TEACHANG STAFF		
1.	UDC (Contractual)	25,500 (Fixed)	1
2.	Cook	Pay Level-1	1
3.	Peon cum Chowkidar	Pay Level-1	1
4.	Driver (Contractual)	19,900 (Fixed)	1
5.	Mali (Contractual)	18,000 (Fixed)	1
6.	Sweeper	Pay Level-1	1
7.	Guardman (Contractual)	18,000 (Fixed)	1
8.	Hostel Cook (Contractual)	19,900 (Fixed)	1

Annexure

RESULT OF THE BAUDH DARSHAN SANSKRIT VIDYALAYA KEYLONG, LAHAUL & SPITI, H.P. FOR THE YEAR 2020–2021

S.No.	Class	No. of Students	Appeared	Passed	Pass %
1.	1st	09	03	03	100
2.	2nd	02	01	01	100
3.	3rd	06	06	06	100
4.	4th	14	09	09	100
5.	5th	09	07	07	100
6.	6th	04	04	04	100
7.	7th	06	06	06	100
8.	8th	06	06	06	100
9.	PM-I	06	06	06	100
Total		**62**	**48**	**48**	**100**

Annexure

THE STAFF STRENGTH OF THE BAUDH DARSHAN SANSKRIT VIDYALAYA, KEYLONG, H.P.

S.No.	Teaching Staff	Pay Band	Sanct. Post
A. Teaching Staff			
1.	Headmaster	Pay Level-8	1
2.	T.G.T.	Pay Level-7	8
3.	Phy. Ed. Teacher	Pay Level-7	1
B. Non-Teaching Staff			
4.	U.D.C.	Pay Level-4	1
5.	Class-IV	Pay Level-1	3